राजभाषा उत्कर्ष

राजभाषा गृह पत्रिका वर्ष 2024-25 अंक-7

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि.
ESIC

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे

प्लॉट सं. ए-12/1, एम.आई.डी.सी., एल.बी.एस. मार्ग, वागले एस्टेट
डाकघर के पास, ठाणे (प.), महाराष्ट्र - 400604
ई-मेल : dir-thane@esic.nic.in ☎: 022-69074702

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे को राजभाषा उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए नराकास पुरस्कार

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ठाणे

संयोजक सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

प्रमाण पत्र

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे को वर्ष - 2024 में भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए समिति द्वारा **कार्यालय श्रेणी** में **द्वितीय पुरस्कार** स्वरुप यह प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है.

नवीन ग्रोवर
अध्यक्ष

अश्वनी धींगड़ा
संरक्षक

ठाणे, 27 जनवरी, 2025

राजभाषा उत्कर्ष

अंक 7 वर्ष 2024-25

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

संरक्षक

श्री सुधाकर सिंह
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

संपादक

श्रीमती गीतांजलि अंतिल
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री अंतरिक्ष कुमार
उप निदेशक
श्री सुशील कुमार
उप निदेशक
श्री आमोद कुमार
सहायक निदेशक

टंकण एवं संपादन सहयोग

राजभाषा शाखा

प्रकाशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे
प्लॉट सं. ए-12/1, एम.आई.डी.सी.,
एल.बी.एस. मार्ग, ठाणे (प.) – 400604

अस्वीकरण

यह गृहपत्रिका केवल विभागीय परिचालन तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए का प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका की रचनाओं में उद्धृत विचार रचनाकारों के खुद के विचार हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रतीकात्मक रूप से कुछ चित्र इंटरनेट से साभार लिए गए हैं, जिन पर उन कॉपीराइट केवल चित्रकार या फोटोग्राफर का ही रहेगा।

इस अंक में

क्र.सं.	विवरण	रचनाकार	पृ.सं.
1	महानिदेशक का संदेश		4
2	बीमा आयुक्त (रा.भा.) का संदेश		5
3	संरक्षक की कलम से		6
4	संपादक की कलम से		7
5	राजभाषा पखवाड़ा 2024 की रिपोर्ट		8-15
6	विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के विजेता		16-17
7	क.रा.बी. निग की शिकायत निवारण प्रणाली	श्री सचिन ताजवे	18-19
8	समानता के सिद्धांत और भारतीय कानून	श्री प्रदीप जायभाये	20-21
9	रंग रूप – एक किताब	श्री अंतरिक्ष कुमार	22
10	समय से परे – प्रेम	श्री सुशील कुमार	23-25
1	स्ट्रीट फोटोग्राफी – एक दर्शन	श्री आमोद कुमार	26-27
2	नजरिए का महत्व	श्री हर्षद सोलंकी	28-33
3	जीवन की नदी, आंसू	श्रीमती गीतांजलि अंतिल	34
4	भारतीय सांस्कृतिक विविधता	श्रीमती शॉयनी थॉमस	35
5	आंख मूंदकर देखना	श्रीमती संगीता लिखार	36
6	तुमसा जहां कहीं न मिलता	श्रीमती संगीता लिखार	36
7	सोशल मीडिया के युग में झूठी खबरें	कु. मनीषा	37
8	महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला	श्री रविकुमार तेलवड़े	38
9	एक सैनिक की कलम से	श्री सुवीन कुमार	39-40
10	ईएसआई चिंता से मुक्ति है	श्री सुवीन कुमार	40
21	अंतरिक्ष में भारत	श्रीमती प्रबीशा बालन	41-42
22	एक मां और उसके तीन बच्चे	श्री परेश चव्हाण	43-44
23	बंद कमरे की तितली	कु. मौसमी कुमारी	45
24	बेरोजगार	श्री सुदेश लकवाड़	46
25	बेटे भी घर छोड़ जाते हैं...	श्री सुदेश लकवाड़	47
26	1 से 100 तक मराठी अंक	राजभाषा शाखा	48
27	हिंदी ज्ञान की परिभाषा	राजभाषा शाखा	49
28	वर्तमान संसदीय राजभाषा समिति	राजभाषा शाखा	49
29	निगम में हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं	राजभाषा शाखा	50-51
30	हिंदी कार्यशाला की झलकियां	राजभाषा शाखा	52
31	गणतंत्र दिवस की झलकियां	राजभाषा शाखा	53
32	महिला दिवस की झलकियां	राजभाषा शाखा	53
33	अन्य कार्यक्रमों की झलकियां	राजभाषा शाखा	54

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002

अशोक कुमार सिंह (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे अपनी गृह पत्रिका 'राजभाषा उत्कर्ष के 7वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है और राजभाषा के प्रति संवैधानिक कर्तव्यों का पूरी सजगता से अनुपालन का द्योतक है।

आशा है, गृह पत्रिका राजभाषा उत्कर्ष के माध्यम से कार्मिकों के राजभाषा हिंदी में कार्य करने की प्रवृत्ति में और वृद्धि होगी।

शुभकामनाओं सहित,

(अशोक कुमार सिंह)

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संदेश

राजभाषा कार्यान्वयन के प्रतिबद्धता एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रधानता देते हुए उप क्षेत्रीय कार्यालय ठाणे द्वारा हिंदी पत्रिका 'राजभाषा उत्कर्ष' का प्रकाशन एक सुखद प्रयास है। हिंदी व मराठी की भाषायी निकटता के कारण स्थानीय कार्मिकों को भी आसानी होती है। महाराष्ट्र हिंदी के लिए एक उर्वरा भूमि रही है। आशा है हिंदी पत्रिका अपनी सामग्री से कार्मिकों में हिंदी समझ बढ़ाने और सरकारी कामकाज में बढ़ोत्तरी करने में सहयोगी होगी।

पत्रिका से जुड़े समस्त पक्ष को मेरी शुभकामनाएँ।

(रत्नेश कुमार गौतम)

संरक्षक की कलम से...

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे की विभागीय वार्षिक हिंदी गृहपत्रिका 'राजभाषा उत्कर्ष' का सातवां अंक आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

सरकारी कार्मिकों की सृजनात्मकता को एक मंच देने के रूप में विभागीय पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। साथ ही, प्रेरणा और प्रोत्साहन से राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने के उद्देश्य में भी पत्रिकाएं एक अत्यंत सशक्त माध्यम बनती है। विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय के विभिन्न कार्यकलापों को दर्शाने तथा क.रा.बी. निगम की पहुंच को विस्तार देने में जनसंपर्क माध्यम की भी भूमिका निभाती हैं। इसी क्रम में यह पत्रिका आप सबके समक्ष प्रस्तुत है।

पत्रिका में योगदान देने वाले लेखकों तथा रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं धन्यवाद देता हूं।

मैं यह आशा करता हूं कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं पर पाठकगण अपने बहुमूल्य सुझाव तथा फीडबैक देकर पत्रिका के आगामी अंको को और बेहतर बनाने में हमें सहायता प्रदान करेंगे।

(सुधाकर सिंह)
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

संपादक की कलम से...

क.रा.बी. निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे की वार्षिक हिंदी गृहपत्रिका 'राजभाषा उत्कर्ष' का यह सातवां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

आज के डिजिटल युग में जब सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति के इतने सारे साधन उपलब्ध हैं, तब कागज और कलम से स्वयं मूल रचना कर पाना इतना सरल नहीं रह गया है। फिर भी लेखकों तथा पाठकों का एक वर्ग अभी भी है, जो फुरसत से बैठकर किताबें, पत्रिकाएं लिखना तथा पढ़ना पसंद करता है। ऐसे ही रचनाकारों तथा पाठकों के अथक प्रयासों से विभागीय पत्रिकाएं अभी भी छप रही हैं और पढ़ी जा रही हैं। इस कार्यालय में भी ऐसे ही रचनाकारों ने अपने बहुमूल्य योगदान से इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है। मैं उन सभी का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

मैं यह आशा करती हूं कि पत्रिका के आगामी अंकों में भी इसी तरह सबका सहयोग प्राप्त होगा।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं पर पाठकों के बहुमूल्य सुझाव तथा फीडबैक सादर आमंत्रित हैं।

(गीतांजलि अंतिल)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे के राजभाषा पखवाड़ा समापन / पुरस्कार वितरण समारोह की रिपोर्ट

श्रम एवं रोजगाार मंत्रालय के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे में हर वर्ष की तरह इस बार भी दिनांक 14 सितंबर से 29 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया तथा दिनांक 30 सितंबर को राजभाषा पखवाड़ा समापन / पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान किए गए कार्यकलाप

राजभाषा पखवाड़े के दौरान कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई कार्य किए गए, जिनमें कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में सभी अधिकारियों/अधीक्षकों के साथ दिनांक 18-09-24 को एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली अन्य गतिविधियों के संबंध में चर्चा की गई।

कार्यालय में प्रयोग की जाने वाली दैनंदिन प्रयोग की टिप्पणियों की सूची भी परिचालित की गई। साथ ही, विशेष अनुदेश के रूप में संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली के पृष्ठ संख्या 32 से 44 में दिए गए अनुदेश अनुपालन हेतु कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच परिचालित की गई। दिनांक 25-09-24 को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई तथा पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूची परिचालित की गई ताकि कार्मिकों में हिंदी के प्रति रुचि विकसित की जा सके।

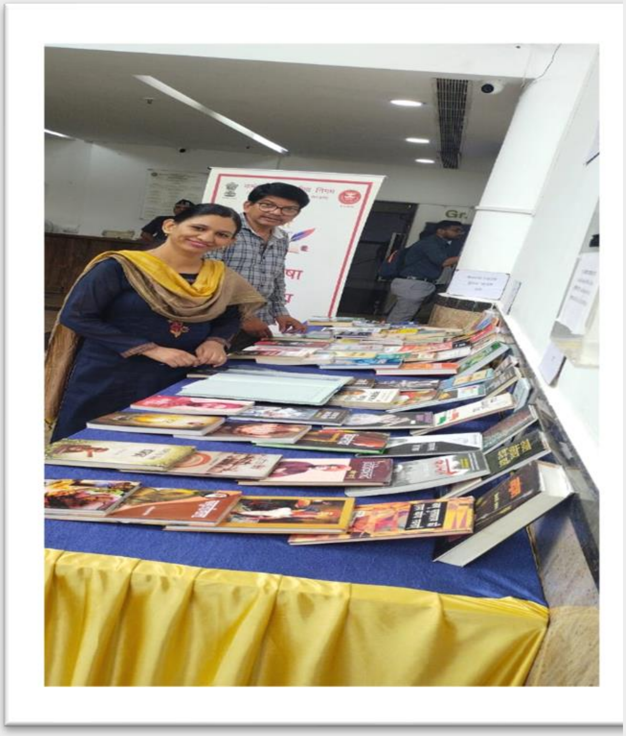

राजभाषा पखवाड़े के दौरान कार्यालय में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं यथा हिंदी वाक्, हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिताएं की गईं, जिनमें कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

उक्त प्रतियोगिताओं के निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी पुरस्कार विजेता रहे:-

1. **दिनांक 20-09-2024 को आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता**

क्र.सं.	कार्मिक का नाम	कर्मचारी कोड	पदनाम	वाक्	पुरस्कार राशि
1	श्रीमती ज्योति गर्ग	139443	प्र.श्रे.लि.	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्री सचिन डावल	107923	सहायक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**
3	श्री सुवीन कुमार	138804	सहायक	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्री संतोष कुमार	148587	सहायक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्री पंकज कुमार	175684	अ.श्रे.लि.	**पंचम**	**500/- रु.**
हिंदीतर भाषी					
1	श्रीमती प्रबिशा बालन	159373	सहायक	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्रीराज पिल्लई	160190	प्रवर श्रेणी लिपिक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**

2. **दिनांक 26-09-2024 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता**

क्र.सं.	कार्मिक का नाम	कर्मचारी कोड	पदनाम	निबंध	पुरस्कार राशि
1	श्रीमती ज्योति गर्ग	139443	प्र.श्रे.लि.	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्री सचिन डावल	107923	सहायक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**

3	श्री सुवीन कुमार	138804	सहायक	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्री संतोष कुमार	148587	सहायक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्री अभिषेक कुमार	172148	सहायक	**पंचम**	**500/- रु.**
			हिंदीतर भाषी		
1	श्रीमती एल गीता	107963	शाखा प्रबंधक	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्रीराज पिल्लई	160190	प्रवर श्रेणी लिपिक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**
3	श्रीमती प्रबिशा बालन	159373	सहायक	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्रीमती रोजलिन परिडा	183194	प्रवर श्रेणी लिपिक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्रीमती मामोनी सरकार	148445	सहायक	**पंचम**	**500/- रु.**

3. **दिनांक 26-09-2024 को आयोजित टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता**

क्र.सं.	**कार्मिक का नाम (श्री/श्रीमती/कु.)**	**कर्मचारी कोड**	**पदनाम**	**टिप्पण-आलेखन**	**पुरस्कार राशि**
1	श्री संतोष कुमार	148587	सहायक	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्री अभिषेक कुमार	172148	सहायक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**
3	श्री सचिन डावल	107923	सहायक	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्री आकाश भालेराव	171420	सहायक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्री रविश कुमार सिंह	172007	सहायक	**पंचम**	**500/- रु.**
			हिंदीतर भाषी		
1	श्रीमती प्रबिशा बालन	159373	सहायक	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्रीराज पिल्लई	160190	प्रवर श्रेणी लिपिक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**
3	श्रीमती रोजलिन परिडा	183194	प्रवर श्रेणी लिपिक	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्रीमती एल गीता	107963	शाखा प्रबंधक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्रीमती मामोनी सरकार	148445	सहायक	**पंचम**	**500/- रु.**

4. **दिनांक 26-09-2024 को आयोजित राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता**

क्र.सं.	**कार्मिक का नाम (श्री/श्रीमती/कु.)**	**कर्मचारी कोड**	**पदनाम**	**राजभाषा ज्ञान**	**पुरस्कार राशि**
1	श्रीमती सिद्धि अग्रवाल	189762	प्र.श्रे.लि.	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्री संतोष कुमार	148587	अवर श्रेणी लिपिक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**
3	श्रीमती ज्योति गर्ग	139443	प्र.श्रे.लि.	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्री मनीष राठौर	190666	आशुलिपिक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्री सचिन डावल	107923	सहायक	**पंचम**	**500/- रु.**
			हिंदीतर भाषी		
1	श्रीमती रोजलिन परिडा	183194	प्रवर श्रेणी लिपिक	**प्रथम**	**1800/- रु.**
2	श्रीमती प्रबिशा बालन	159373	सहायक	**द्वितीय**	**1500/- रु.**
3	श्रीमती एल गीता	107963	शाखा प्रबंधक	**तृतीय**	**1200/- रु.**
4	श्रीराज पिल्लई	160190	प्रवर श्रेणी लिपिक	**चतुर्थ**	**500/- रु.**
5	श्रीमती मामोनी सरकार	148445	सहायक	**पंचम**	**500/- रु.**

राजभाषा पखवाड़े का समापन समारोह का कार्यक्रम - दिनांक 30 सितंबर, 2024

दिनांक 30 सितंबर, 2024 को कार्यालय अध्यक्ष श्री सुधाकर सिंह, उप निदेशक (प्रभारी) की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा पखवाड़े का समापन / पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मिथिलेश शर्मा, अध्यक्ष हिंदी विभाग एवं सहायक प्रोफेसर, आर.जे. कॉलेज, घाटकोपर उपस्थित रहीं।

राजभाषा पखवाड़े के समापन समारोह का आरंभ निगम के प्रतीक पंचदीप प्रज्वलन तथा सरस्वती वंदना से हुआ तथा समापन समारोह में मंच संचालन करते हुए श्रीमती प्रबीशा बालन ने सभी उपस्थितों को राजभाषा पखवाड़े तथा हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी।

कार्यालय प्रमुख श्री सुधाकर सिंह, उप निदेशक (प्रभारी) ने मुख्य अतिथि डॉ. मिथिलेश शर्मा को पुष्पगुच्छ, श्रीफल तथा शॉल देकर उनका स्वागत किया। उन्हें स्मृति स्वरूप एक स्मृति-चिह्न प्रदान किया गया। श्रीमती गीतांजलि अंतिल, सहायक निदेशक ने कार्यालय प्रमुख श्री सुधाकर सिंह को पुष्पगुच्छ, श्रीफल तथा शॉल देकर उनका सम्मान किया।

स्वागत के पश्चात् कार्मिकों द्वारा कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा निर्मित फिल्म तथा हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर भारत मंडपम में दर्शायी गई - 'स्वतंत्र भारत की राजभाषा-हिंदी' (https://drive.google.com/drive/folders/1Jv18zeNcADBlGzSvB74_tjAVeT4O7GCt) सभी दर्शकों को दिखाई गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पश्चात् अतिथि महोदया द्वारा कार्यालय में आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले अन्य गैर-विजेता प्रतिभागियों तथा समारोह में अपनी प्रस्तुति देने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहन स्वरूप स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे में इस वर्ष से ही अंत: अनुभागीय राजभाषा चलशील्ड योजना लागू की गई तथा वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान शाखाओं द्वारा किए गए कार्य निष्पादन के आधार पर कार्यालय में हिंदी में सर्वाधिक उत्कृष्ट कार्य करने वाली विजेता शाखा - रोकड़ शाखा को अंत: अनुभागीय राजभाषा चलशील्ड से सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् श्री आमोद कुमार, सहायक निदेशक ने माननीय गृहमंत्री के संदेश का वाचन किया। श्री सुशील कुमार श्यामकुंवर, उप निदेशक ने निगम के महानिदेशक की अपील का वाचन किया। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से स्वाभाविक रूप से अगर कोई भाषा राजभाषा बन सकती थी तो वह हिंदी ही है। यह इसलिए है कि हिंदी जैसी बोली जाती है, वैसे ही लिखी जाती है। इसलिए इस भाषा को लिखना-पढ़ना, सीखना-सिखाना बहुत आसान है। साथ ही, अर्ध हिंदी भाषी क्षेत्रों की भाषाओं की लिपियां भी हिंदी भाषा से मिलती-जुलती है, जिससे इसके संपर्क का दायरा और बड़ा हो जाता है। इसलिए हमें हिंदी पर गर्व करना चाहिए तथा इसे आगे बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कार्मिकों द्वारा हिंदी में काम करने के लिए संकल्प लेने का आह्वान किया।

श्री हर्षद सोलंकी, सहायक निदेशक ने हिंदी तथा अन्य मातृभाषाओं के प्रयोग तथा उनके संरक्षण के महत्व पर बल दिया।

अतिथि वक्ता डॉ. मिथिलेश शर्मा ने 'विश्वभाषा की ओर अग्रसर होती हिंदी' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देशों में हिंदी बोली और पढ़ाई जाती है, किंतु सरकारी प्रयासों के साथ-साथ हम नागरिकों के प्रयासों से ही हिंदी आगे बढ़ पाएगी। हमें अपनी भाषा को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव प्रायस करने चाहिए।

श्रीमती गीतांजलि अंतिल, सहायक निदेशक ने विजेताओं को बधाई दी तथा कार्मिकों से बढ़-चढ़ कर हिंदी में काम करने और अन्य गतिविधियों में भाग लेने के लिए उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने हिंदी समेत सभी भारतीय भाषाओं से जुड़ी अपनी पहचान के प्रति सजग होने तथा अपनी भाषाओं के प्रति गर्व की भावना विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यालय अध्यक्ष श्री सुधाकर सिंह ने कार्यालय में हिंदी में हो रहे काम पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की तथा इसके लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा की किसी अन्य भाषा से प्रतिद्वंद्विता नहीं है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है कि हम सुसंस्कृत हिंदी का प्रयोग करें बल्कि सरल हिंदी के प्रयोग से हम अपने कामकाज को आसानी से कर सकते हैं और अपनी भाषा की भी प्रगति कर सकते हैं। आज की तारीख में मोबाइल फोन से लेकर कंप्यूटर, इंटरनेट, चैट जीपीटी, तरह-तरह के ट्रांसलेशन टूल्स हिंदी के प्रयोग को बहुत आसान बना देते हैं।

भारत सरकार की नीति भी यही कहती है कि आप बोलचाल की सरल हिंदी को अपने कामकाज की शैली बनाइए। इसलिए मेरा सबसे यही अनुरोध है कि अपने रूटीन कामकाज में हिंदी का प्रयोग करें और मातृभाषा के साथ-साथ अपनी देश की राजभाषा का भी सम्मान बढ़ाइए।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजभाषा पखवाड़े के समापन समारोह की समाचार-पत्रों में रिपोर्ट

राज्य बीमा ऑफिस में मना राजभाषा पखवाड़ा

■ ठाणे, (सं). श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले कर्मचारी बीमा निगम के उपक्षेत्रीय कार्यालय में 14 से 29 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया था. इसके बाद अंतिम दिन पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में घाटकोपर स्थित आर जे कालेज के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ मिथिलेश शर्मा मौजूद थीं. इस कार्यक्रम का आयोजन उप निदेशक सुधाकर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया.

हिंदी के प्रचार के लिए लगी पुस्तक प्रदर्शनी

राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने हिस्सा लिया. हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था. पखवाड़ा के समापन समारोह में कर्मचारियों से हिंदी भाषा में काम करने के लिए कहा गया. इसके अलावा विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वालों को सम्मानित भी किया गया. कार्यक्रम की प्रमुख अतिथि डॉ मिथिलेश वर्मा ने विश्वभाषा की ओर अग्रसर होती हिंदी भाषा को लेकर अपने विचार व्यक्त किए.

राजभाषा पखवाड़ा मनाया

प्रात:काल संवाददाता

मुंबई। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे में 14 से 29 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। 30 सितम्बर को समापन व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यालय अध्यक्ष सुधाकर सिंह, उप निदेशक (प्रभारी) की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. मिथिलेश शर्मा, अध्यक्ष हिंदी विभाग एवं सहायक प्रोफेसर, आर.जे. कॉलेज, घाटकोपर थीं। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसमें कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। समापन समारोह का आरंभ निगम के प्रतीक पंचदीप प्रज्जवलन तथा सरस्वती वंदना से हुआ। आमोद कुमार, सहायक निदेशक ने गृहमंत्री के संदेश का वाचन किया। सुशील कुमार श्यामकुंवर, उप निदेशक ने निगम के महानिदेशक की अपील का वाचन किया। हर्षद सोलंकी, सहायक निदेशक ने हिंदी तथा अन्य मातृभाषाओं के प्रयोग तथा उनके संरक्षण के महत्व पर बल दिया। गीतांजलि ऑतिल, सहायक निदेशक ने कार्मिकों से बढ़-चढ़ कर हिंदी में काम करने और अन्य गतिविधियों में भाग लेने के लिए उत्साहवर्धन किया। कार्यालय अध्यक्ष सुधाकर सिंह ने हिंदी में हो रहे काम पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की सराहना की।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे में हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के विजेता

मूल हिंदी टिप्पण-आलेखन पुरस्कार प्रतियोगिता वर्ष 2023-2024

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	कर्म कोड	पदनाम	तैनाती स्थान	पुरस्कार	पुरस्कार
1	श्री रविश कुमार सिंह	172007	सहायक	बीमा शाखा-3	प्रथम पुरस्कार	5,000/-रु.
2	श्री अभिषेक कुमार	172148	सहायक	वसूली शाखा	प्रथम पुरस्कार	5,000/-रु.
3	श्रीमती रोजालिन परिडा	183194	प्र.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा	द्वितीय पुरस्कार	3,000/-रु.
4	श्री सौरभ कुमार	171927	सहायक	बीमा शाखा-3	द्वितीय पुरस्कार	3,000/-रु.
5	श्री मनीष कुमार	175068	सहायक	बीमा शाखा-5	द्वितीय पुरस्कार	3,000/-रु.
6	श्रीमती संध्या वैद्यनाथन	138014	सहायक	प्रशासन शाखा	तृतीय पुरस्कार	2,000/-रु.
7	श्री मनीष राठौर	190666	आशुलिपिक	प्रशासन शाखा	तृतीय पुरस्कार	2,000/-रु.
8	श्री हर्ष हेडाउ	171913	सहायक	प्रशासन शाखा	तृतीय पुरस्कार	2,000/-रु.

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना वर्ष 2023

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	कर्म. कोड	पदनाम	तैनाती स्थान
1	श्री संतोष कुमार	148587	सहायक	बड़े नियोजक कक्ष
2	श्रीमती रिंकी खापेकर	185554	प्र.श्रे.लि.	बीमा शाखा - 1
3	श्री सौरभ कुमार	171927	सहायक	बीमा शाखा - 3
4	श्रीमती प्रणाली उएके	137471	सहायक	बीमा शाखा - 3
5	श्री गणेश सनप	148677	सहायक	बीमा शाखा - 3
6	श्री रविश कुमार सिंह	172007	सहायक	बीमा शाखा - 3
7	श्री प्रतीक मुले	184076	प्र.श्रे.लि.	बीमा शाखा - 3
8	श्री शुभम जनबंधु	189311	प्र.श्रे.लि.	बीमा शाखा - 3
9	श्री प्रमोद सुरेश पाटील	107969	सहायक	बीमा शाखा - 4
10	श्री कंचन शंकर हडाल	107928	सहायक	बीमा शाखा - 4
11	श्री मुकेश मंडल	171911	सहायक	बीमा शाखा - 4
12	श्री सुधाकर बढीराम पाटील	148520	सहायक	बीमा शाखा - 4
14	श्री भीम सिंह	136723	प्र.श्रे.लि.	बीमा शाखा - 4
15	श्री अंकित मोहन अस्वार	189320	प्र.श्रे.लि.	बीमा शाखा - 4
16	श्री मनीष कुमार	175068	सहायक	बीमा शाखा - 5
17	श्री हर्ष हेडाउ	171913	सहायक	वसूली शाखा

18	श्री अभिषेक कुमार	172148	सहायक	वसूली शाखा
19	श्री राजीव रंजन	136715	प्र.श्रे.लि.	वसूली शाखा
20	श्री राम कुंवर	138019	सहायक	वित्त व लेखा शाखा
21	श्री विश्वास अशोक नाड़ेकर	148493	सहायक	वित्त व लेखा शाखा
22	श्री विकास हुड्डा	175064	प्र.श्रे.लि.	वित्त व लेखा शाखा
23	श्री पंकज पटेल	190179	प्र.श्रे.लि.	वित्त व लेखा शाखा
24	श्री मनखुश कुमार	174049	अ.श्रे.लि.	वित्त व लेखा शाखा
25	कु. मनीषा	190086	सा.सु. अधिकारी	रोकड़ शाखा
26	श्रीमती पूर्णा डोंगरे	107930	सहायक	रोकड़ शाखा
27	श्री योगेश्वर वाल्वी	171961	सहायक	रोकड़ शाखा
28	श्री आकाश अनिल भालेराव	171420	सहायक	रोकड़ शाखा
29	श्री पौरूष कुमार	175067	प्र.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा
30	श्री अरूण कुमार	136248	प्र.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा
31	श्री मनोज कुमार सिंह	148695	सहायक	हितलाभ शाखा - 1
32	श्री दिलीप आढारी	107916	सहायक	हितलाभ शाखा - 2
33	श्रीमती रूपाली मनोज धुलधर	147990	सहायक	हितलाभ शाखा - 2
34	कु. दीपिका चव्हाण	189314	प्र.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा - 2
35	श्रीमती संध्या वैद्यनाथन	138014	सहायक	प्रशासन शाखा
36	श्री तबरेज सिद्दकी	172000	सहायक	प्रशासन शाखा
37	श्रीमती अदिति मुंडेकर	148456	सहायक	प्रशासन शाखा
38	श्री मनीष राठौर	190666	आशुलिपिक	प्रशासन शाखा
39	श्री अजिंक्य बोठे	189516	प्र.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा
40	श्री भगवान डेकाटे	106964	सहायक	प्रेषण शाखा
41	श्री प्रवीण कुमार	138025	सहायक	आई.सी.टी.
42	श्री दीपांकर कुमार	175461	प्र.श्रे.लि.	आर.टी.आई कक्ष
43	श्री अक्षय सुभाष बांगर	183164	प्र.श्रे.लि.	डीसीबीओ पनवेल

क.रा.बी. निगम की शिकायत निवारण प्रणाली

(Grievance Redressal Mechanism of ESIC)

"सुशासन का मूल आधार जमीनी स्तर पर सेवा प्रदान करना है। अमृत काल में, हम लोगों के जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालने और एक विकसित भारत बनाने की दिशा में अपने प्रयासों में दृढ़ हैं।" - माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निवारण प्रक्रिया प्रवाह (Redress Process Flow)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम भारत में एक वैधानिक निकाय है जो श्रम और रोजगार मंत्रालय के अधीन काम करता है। क.रा.बी. निगम कर्मचारियों और उनके आश्रितों को सामाजिक सुरक्षा और स्वास्थ्य सेवा लाभ प्रदान करता है। सुचारू और पारदर्शी कामकाज सुनिश्चित करने के लिए, क.रा.बी. निगम ने एक मजबूत शिकायत निवारण तंत्र स्थापित किया है। इस तंत्र का उद्देश्य कर्मचारियों और अन्य हितधारकों की चिंताओं, शिकायतों या व्यथाओं को कुशलतापूर्वक संबोधित करना और हल करना है।

शिकायत का अर्थ ऐसा कोई भी संचार है, जो क.रा.बी. निगम और/या उसके मध्यस्थ से किसी कार्रवाई या कार्रवाई की कमी, सेवा के मानक/सेवा की कमी और/या प्रक्रिया के बारे में असंतोष व्यक्त करता है या उपचारात्मक कार्रवाई की अपेक्षा करता है, जहां प्रतिक्रिया या समाधान स्पष्ट रूप से या निहित रूप से अपेक्षित है।

शिकायत दर्ज करने के माध्यम:-

कोई भी संबंधित व्यक्ति नीचे दी गई किसी भी सुविधा का उपयोग करके अपनी शिकायत दर्ज कर सकता है:

1. क.रा.बी. निगम वेबसाइट www.esic.gov.in के माध्यम से होमपेज पर "सेवाएं" लिंक में "शिकायत निवारण" विकल्प का चयन करके।
2. CPGRAMS पोर्टल: https://pgportal.gov.in/signin
    1. CPGRAM में लॉग इन करें।
    2. "शिकायत विवरण" अनुभाग में "अन्य/सूचीबद्ध नहीं/ज्ञात नहीं" चुनें।
    3. "मंत्रालय/विभाग" ड्रॉप डाउन में ESIC चुनें।
    4. "अधीनस्थ विभाग/कार्यालय" में क्षेत्रीय कार्यालय चुनें।
    5. शिकायत का विवरण प्रदान करें।
3. ईमेल: pg-hqrs@esic.nic.in या किसी भी मुख्यालय कार्यालय/क्षेत्रीय कार्यालय के ईमेल पते के माध्यम से। क.रा.बी. निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे के संबंध में यह pgcell-sro.thane@esic.nic.in है
4. क.रा.बी. निगम टोल फ्री हेल्पलाइन 1800112526 (सामान्य हेल्पलाइन) और 1800113839 (मेडिकल हेल्पलाइन) हैं।
5. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार में शिकायत दर्ज कराने के लिए ई-मेल आईडी pgcell-labour@nic.in है।
6. सुविधा समागम: हितधारकों/लाभार्थियों की लोक शिकायतों के त्वरित निवारण के लिए सुविधा समागम समय-समय पर क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय में प्रत्येक माह के दूसरे बुधवार (यदि अवकाश हो तो अगले कार्य दिवस) को तथा शाखा कार्यालय में प्रत्येक माह के दूसरे शुक्रवार को नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।
7. शिकायत हार्डकॉपी के माध्यम से डाक द्वारा, शिकायत पेटी आदि के माध्यम से या संबंधित क्षेत्रीय कार्यालयों/मुख्यालय कार्यालय में प्रत्यक्ष रूप से (व्यक्तिगत रूप से) भी प्रस्तुत की जा सकती है।

वर्तमान दिशा-निर्देशों के अनुसार विभिन्न प्राधिकारियों को शिकायत प्राप्ति के 15 दिनों के भीतर विभिन्न माध्यमों से प्राप्त शिकायतों का निवारण करना आवश्यक है।

सीपीग्राम

केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली (सीपीग्राम) नागरिकों के लिए 24x7 उपलब्ध एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म है, जहाँ वे सेवा वितरण से संबंधित किसी भी विषय पर सार्वजनिक प्राधिकारियों के समक्ष अपनी शिकायतें दर्ज करा सकते हैं। यह भारत सरकार और राज्यों के सभी मंत्रालयों/विभागों से जुड़ा एक एकल पोर्टल है। प्रत्येक मंत्रालय और राज्य की इस प्रणाली तक भूमिका-आधारित पहुँच है। सीपीग्राम नागरिकों के लिए स्टैंडअलोन मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से भी सुलभ है, जिसे गूगल प्ले स्टोर और उमंग के साथ एकीकृत मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से डाउनलोड किया जा सकता है।

सीपीग्राम की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

1. ऑनलाइन शिकायत प्रस्तुत करना: व्यक्ति सीपीग्राम पोर्टल के माध्यम से सरकारी सेवाओं से संबंधित अपनी शिकायतें दर्ज करा सकते हैं। यह ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म उपयोगकर्ताओं को कहीं से भी अपनी शिकायतें आसानी से दर्ज कराने की अनुमति देता है।
2. उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफ़ेस: सीपीग्राम एक उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफ़ेस प्रदान करता है, जो शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया को सरल बनाता है। उपयोगकर्ता अपनी शिकायतें दर्ज कराने और अपनी शिकायतों की स्थिति को ट्रैक करने के लिए पोर्टल पर आसानी से नेविगेट कर सकते हैं।
3. सरकारी विभागों के साथ एकीकरण: सीपीग्राम को विभिन्न सरकारी विभागों और मंत्रालयों के साथ एकीकृत किया गया है, जिससे शिकायतों को समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्बाध रूप से स्थानांतरित किया जा सकता है।
4. वास्तविक समय की निगरानी: यह प्रणाली शिकायत समाधान की वास्तविक समय की निगरानी की अनुमति देती है। उपयोगकर्ता अपनी शिकायतों की स्थिति को ट्रैक कर सकते हैं और संबंधित अधिकारी शिकायतों की कुशलतापूर्वक निगरानी और प्रबंधन कर सकते हैं।
5. एसएमएस और ईमेल अलर्ट: सीपीग्राम शिकायतकर्ताओं को स्वचालित एसएमएस और ईमेल अलर्ट भेजता है, जिससे उन्हें उनकी शिकायतों की स्थिति के बारे में जानकारी मिलती रहती है। यह सुविधा निवारण प्रक्रिया के दौरान पारदर्शिता और संचार को बढ़ाती है।
6. निगरानी के लिए डैशबोर्ड: सरकारी अधिकारियों और प्रशासकों के पास एक डैशबोर्ड तक पहुंच है जो प्राप्त, हल की गई और लंबित शिकायतों का अवलोकन प्रदान करता है। यह निरंतर सुधार के लिए बेहतर निगरानी और विश्लेषण की सुविधा प्रदान करता है।
7. एस्केलेशन मैकेनिज्म: सीपीग्राम में एक एस्केलेशन मैकेनिज्म शामिल है, जो यह सुनिश्चित करता है कि अनसुलझी शिकायतों को समय पर हस्तक्षेप के लिए उच्च अधिकारियों तक उचित तरीके से पहुंचाया जाए।
8. फीडबैक मैकेनिज्म: एक बार शिकायत का समाधान हो जाने के बाद, सिस्टम उपयोगकर्ताओं को समाधान प्रक्रिया पर फीडबैक देने की अनुमति देता है। यह फीडबैक शिकायत निवारण तंत्र की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में मदद करता है।

ऐसे मुद्दे जो निवारण के लिए सीपीग्राम पर नहीं उठाए जा सकते:

1. आरटीआई मामले
2. न्यायालय से संबंधित/न्यायालयीन मामले
3. धार्मिक मामले
4. सुझाव
5. अनुशासनात्मक कार्यवाही आदि सहित सेवा मामलों से संबंधित सरकारी कर्मचारियों की शिकायतें, जब तक कि पीड़ित कर्मचारी ने डीओपीटी के दिनांक 31.08.2015 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 11013/08/2013-स्था.(ए-III) को ध्यान में रखते हुए निर्धारित माध्यमों का उपयोग न कर लिया हो।

सीपीग्राम केंद्र सरकार के स्तर पर सार्वजनिक शिकायतों के समाधान में जवाबदेही, पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह चिंताओं और शिकायतों का तुरंत समाधान करके शासन में सुधार और नागरिक संतुष्टि सुनिश्चित करने की सरकार की प्रतिबद्धता का हिस्सा है। क.रा.बी. निगम में शिकायत निवारण तंत्र संगठन और उसके हितधारकों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिकायत दर्ज करने के लिए कई चैनल प्रदान करके और निष्पक्ष और पारदर्शी समाधान प्रक्रिया सुनिश्चित करके, क.रा.बी. निगम का उद्देश्य सामाजिक न्याय और कर्मचारी कल्याण के सिद्धांतों को बनाए रखना है। कार्यबल की उभरती जरूरतों को पूरा करने और सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए शिकायत निवारण तंत्र में नियमित अद्यतन और सुधार आवश्यक हैं।

- सचिन ताजवे

संयुक्त निदेशक

समानता के सिद्धांत और भारतीय श्रम कानून

समानता का सिद्धांत किसी भी लोकतांत्रिक समाज के मूल स्तंभों में से एक है। यह सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर, समान अधिकार और समान न्याय मिले। भारत, एक लोकतांत्रिक देश होने के नाते, अपने संविधान में समानता के सिद्धांत को विशेष महत्व देता है। खासकर श्रमिकों के लिए समानता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कई श्रम कानून बनाए गए हैं, जो श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा और उनके लिए समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करते हैं।

1. समानता का सिद्धांत और भारतीय संविधान

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 14 समानता के अधिकार की गारंटी देता है। यह अनुच्छेद किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करने का निर्देश देता है। इसके अलावा, अनुच्छेद 15 और 16 के तहत किसी भी व्यक्ति के साथ धर्म, जाति, लिंग, जन्म स्थान या भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है। श्रमिकों के संदर्भ में, यह सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि सभी श्रमिकों को समान अवसर और सम्मान मिले, चाहे वे किसी भी क्षेत्र या पृष्ठभूमि से हों।

2. भारतीय श्रम कानूनों में समानता

भारतीय श्रम कानूनों में समानता का सिद्धांत कई रूपों में प्रकट होता है। ये कानून श्रमिकों के लिए न्यूनतम वेतन, काम करने की उचित शर्तें, काम के घंटों की सीमा और सुरक्षा के उपाय सुनिश्चित करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कानून निम्नलिखित हैं:

i. **न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948:** यह अधिनियम श्रमिकों को उनकी योग्यता और कार्य के अनुसार उचित वेतन देने का प्रावधान करता है। यह कानून यह सुनिश्चित करता है कि श्रमिकों को न्यूनतम वेतन मिले और उनके साथ किसी प्रकार का शोषण न हो। यह कानून समानता के सिद्धांत को बल प्रदान करता है, क्योंकि यह सभी श्रमिकों के लिए एक निश्चित न्यूनतम वेतन सुनिश्चित करता है।

ii. **समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976:** यह अधिनियम पुरुष और महिला श्रमिकों के बीच समान वेतन के अधिकार को सुनिश्चित करता है। यह कानून स्पष्ट रूप से यह कहता है कि एक ही काम करने वाले पुरुष और महिला श्रमिकों को समान वेतन दिया जाना चाहिए। इससे महिलाओं के साथ होने वाले वेतन भेदभाव को कम किया गया है और समानता के सिद्धांत को मजबूत किया गया है।

iii. **फैक्ट्री अधिनियम, 1948:** यह अधिनियम श्रमिकों के कार्यस्थल पर सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करता है। इसके तहत काम के घंटे, स्वच्छता, सुरक्षा उपाय और श्रमिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा से संबंधित प्रावधान किए गए हैं। यह कानून सुनिश्चित करता है कि सभी श्रमिकों को समान रूप से सुरक्षित और स्वस्थ कार्य स्थल मिले, जिससे समानता का सिद्धांत प्रकट होता है।

iv. **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), 2005:** यह अधिनियम ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने का काम करता है। इसके तहत, प्रत्येक परिवार को 100 दिनों का रोजगार सुनिश्चित किया जाता है। यह कानून सभी श्रमिकों को समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया है, जिससे गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले ग्रामीण श्रमिकों को भी अपने जीवन स्तर को सुधारने का अवसर मिलता है।

3. समानता के सिद्धांत की चुनौतियाँ

हालांकि भारतीय श्रम कानून समानता के सिद्धांत को सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए हैं, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं। कई क्षेत्रों में आज भी श्रमिकों को न्यूनतम वेतन नहीं मिलता है, खासकर असंगठित क्षेत्रों में। इसके अलावा,

महिलाओं के साथ वेतन भेदभाव अभी भी कई उद्योगों में देखा जाता है। ग्रामीण और शहरी श्रमिकों के बीच भी असमानता पाई जाती है, जहाँ शहरी क्षेत्रों के श्रमिकों को बेहतर सुविधाएँ मिलती हैं।

समानता के सिद्धांत को पूरी तरह से लागू करने के लिए आवश्यक है कि श्रम कानूनों को और अधिक सख्ती से लागू किया जाए और असंगठित क्षेत्रों में श्रमिकों के लिए भी समान अधिकार सुनिश्चित किए जाएं। इसके लिए श्रम निरीक्षकों की संख्या बढ़ानी होगी और उनके काम की निगरानी को मजबूत करना होगा।

4. निष्कर्ष

समानता के सिद्धांत का पालन करना एक विकसित और सशक्त समाज की पहचान है। भारतीय श्रम कानून इस सिद्धांत को लागू करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हैं, लेकिन इसके पूर्ण क्रियान्वयन के लिए समाज, सरकार और उद्योगों को मिलकर काम करना होगा। यह सुनिश्चित करना कि सभी श्रमिकों को समान अवसर, सम्मान और अधिकार मिले, एक सशक्त और समृद्ध भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

- प्रदीप जायभाये

उप निदेशक

रंग रूप - एक किताब

रंग रूप एक ऐसी किताब जिसने मेरे दिल को छू लिया
और किताब की लेखक पूजा दुवेश की सोच को भी !
किताब में रंग रूप की कहानी को दर्शाया गया है कि
रंग रूप ही सब कुछ नहीं है, बल्कि आपकी काबिलियत
ही आपकी पहचान है
किताब में रंग रूप का हर वो पहलू लिखा गया है जिससे
हम और आप कभी ना कभी गुज़रे होंगे।

जैसे –
मेरे सांवले रंग को मेरी कमज़ोरी बताने वाले
तुम होते कौन हो फ्री का ज्ञान बांटने वाले
बिना चोट के घाव देने वाले
तुम होते कौन हो, लाल रंग मत पहनना, यह कहने वाले
रब ने मुझे ऐसा ही बनाया है
मैं खुश हूं अपनी जिंदगी से, तो
तुम होते कौन हो, घर से मत निकलना, यह कहने वाले
मेरी काबिलियत को बिना परखे फैसला सुनाने वाले
तुम होते कौन हो तुम इस काबिल नहीं, हो यह कहने
वाले

मेरे सांवले रंग को मेरी कमज़ोरी बताने वाले
तुम होते कौन हो फ्री का ज्ञान बांटने वाले
इसका मतलब ये बिलकुल भी नहीं है कि गोरा रंग होना
ग़लत है लेकिन गोरे रंग के साथ सांवले रंग का मज़ाक
उड़ाना वो सही नहीं है !

रंग- रूप किताब में ऐसे कई लोगों के बारे मे लिखा गया हैं जो सांवले गोरे रंग के अंतर का सामना करते हैं उन लोगों की भावनाओं के बारे में है जो अपने रंग के कारण समाज द्वारा अपमानित होते हैं !

साथ ही मेरा यह भी मानना है किताब में लेखिका का उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है, ना ही किसी के नजरिए को बदलने का, इस किताब में तो बस एक छोटी सी सोच है जिसे रंग रूप किताब में अल्फाजों के ज़रिए लिखा है।

- अंतरिक्ष कुमार
उप निदेशक

प्रेम - समय से परे

भीड़ भरी गली में जिस पल से उनकी आंखें एक-दूसरे से मिली, उसी पल से एक अनजानी ताकत उन्हें एक-दूसरे की ओर खींचने लगी। चिंगारियां उड़ने लगी और उनके दिलों में प्यार की एक ज्वाला जोर-शोर से धधकने लगी। यह एक ऐसा प्यार था जो साधारण नहीं था, एक ऐसी दैवीय संबंध जिसके सामने सभी तर्क बेकार थे। चुपके से मिलती हर एक नजर, अनजाने में एक-दूसरे के हर स्पर्श से उनकी आत्माएं जुड़ती चली गईं और उनमें चाहत और लालसा का संगीत भरती चली गई।

एक-दूसरे के प्यार में पागल, कबीर और सना अपनी चाहत के उफनते खुमार में मशगूल थे। उनके दिलों को किसी बंधन का अहसास नहीं था और वे एक-दूसरे की खुशी के लिए अपना सब कुछ लुटा देने को तैयार थे। जब वह सना को देखता तो कबीर की आंखें बहुत कुछ कहती थी, उसकी अपलक टकटकी निगाह उसके प्यार की गहराई का सबूत थी। और सना ने भी अपनी हर धड़कन के साथ अपने आप को पूरी तरह कबीर के प्रति समर्पित कर दिया था, यह जानते हुए कि उनका प्यार हर मुश्किल को पार कर लेगा।

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

"बेबी, लव यू... बेबी, लव यू..." कबीर तब मजे से नहा रहा था, जब उसके फोन की प्यारी, सुरीली रिंगटोन बज उठी। यह सोचते हुए कि किसने उसकी सुबह की शांति भंग की, वह जल्दी से बाहर आया और अपना फोन उठाया। यह सना थी।

"हाय डार्लिंग," उसने प्यार से कहा।

"कबीर, मुझे तुमसे तुरंत मिलना है," सना की आवाज बिल्कुल ठंडी और दूर से आती लगी।

"लेकिन क्या हुआ? क्या तुम ठीक हो, सना?" कबीर ने पूछा। उसकी आवाज में चिंता साफ झलक रही थी।

"प्लीज, कबीर, यहां आओ। मैं फोन पर बात नहीं कर सकती," उसने जवाब दिया और अचानक फोन काट दिया।

कबीर सोचने लगा कि क्या हुआ होगा। कल शाम को ही तो वे साथ थे और सब कुछ ठीक लग रहा था। अपने चेहरे पर चिंता की लकीरें लेकर, किसी अनजाने डर से भागता हुआ कबीर जल्दी से सीसीडी गया और पाया कि सना बेसब्री से उसका इंतजार कर रही थी।

"क्या हुआ, डियर?" उसने पूछा। उसकी चिंता महसूस की जा सकती थी।

सना की आंखें दुख और हताशा से भरी हुई थी।

"मुझे तुमसे कुछ चाहिए, कबीर और यह मैं हक से मांगना चाहती हूं। मुझे आशा है, तुम बुरा नहीं मानोगे," उसने कहा। उसके शब्द गंभीरता से पूर्ण थे।

"बिल्कुल, सना। मैं पूरी तरह तुम्हारा हूं। तुम्हारा मेरे तन, मन और आत्मा पर पूरा हक है। बस मुझे बताओ तो सही कि तुम्हें क्या चाहिए। इससे पहले कि तुम बताओ, समझो मैंने तुम्हें दे दिया," उसने कहा। माहौल को हल्का करने के लिए उसने कहा, "चाहो तो तुम्हारे लिए जान दे दूं?"

"इससे भी ज्यादा, कबीर!" धीमी आवाज में, उसने दिल तोड़ने वाली सच्चाई बताई: उसके पापा ने उसकी शादी अपने दोस्त के बेटे से तय कर दी थी। "इस उम्र में मैं उनको दुख नहीं पहुंचा सकती, ना ही मैं उनको मेरे लिए अपने विचार बदलने को कह सकती हूं। वे हमारी शादी के लिए तैयार नहीं है।"

सना की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने कबीर से क्षमा याचना की, उसकी आवाज़ में विनती थी कि वह उसे उनके शाश्वत बंधन से मुक्त कर दे। यह त्याग था, छोड़ने का दर्द था, उस प्रेम का अंत था, जो अब संभव नहीं था। वह इस भय से कांप उठी कि अगर वह रुक गई तो केवल संयोगवश होने वाली मुलाकातें उसके लिए असहनीय हो जाएँगी।

"तो अब मैं तुमसे यह त्याग माँगती हूँ, उपकार नहीं, बल्कि अपने अधिकार के रूप में। क्या तुम मेरी यह इच्छा पूरी कर सकते हो?" सना ने प्रश्न किया।

उस क्षण, कबीर का हृदय हजारों टुकड़ों में बिखर गया। कैसे वह सना के बिना जीवन की कल्पना कर सकता था? परंतु उसने शीघ्र ही अपने विचारों को समेटा और स्नेह से उत्तर दिया, "बिल्कुल, डियर। जब मैंने कहा था कि तुम्हें मेरे शरीर, मन और आत्मा पर पूर्ण अधिकार है, तो मैंने इसे पूरे हृदय से कहा था। तुम आगे बढ़ सकती हो और अपने पिता की इच्छा पूरी कर सकती हो। मैं कभी भी तुम्हारी खुशी के रास्ते में नहीं आऊँगा, मेरी प्रिय। मैं तुम्हारे सुखद भविष्य की कामना करता हूँ!"

वह मुड़ा और दूर चला गया, उसकी आँखों में आँसू उमड़ पड़े।

भारी मन से, कबीर ने वह निर्णय लिया, जिसकी कल्पना भी असंभव थी। उसने उस शहर को छोड़ने का निश्चय किया, जहाँ उनके चोरी-छुपके लिए चुंबनों और कानों में फुसफुसाए गए वादों की यादें बसी थीं। वह ओझल हो गया, जैसे विशाल दुनिया ने उसकी छाया को निगल लिया हो। उसका प्रेम एक छुपी हुई लौ बनकर रह गया।

समय बीतता गया, बिखरे सपनों और अधूरे शब्दों की परछाइयाँ पीछे छूटती गईं।

फिर अचानक एक दिन, नियति के एक अनोखे मोड़ ने कबीर और सना को फिर से आमने-सामने ला खड़ा किया—नैनीताल के व्यस्त मॉल रोड के अंत में, एक शांत कॉफी शॉप में।

कबीर आश्चर्यचकित रह गया। वहाँ, एक कोने की मेज़ पर सना अकेली बैठी थी, अपने हाथों में कॉफी का कप लिए हुए। समय के साथ सना की सुंदरता और भी निखर चुकी थी। उसकी सहज गरिमा में एक दिव्य आभा झलक रही थी। उसने साड़ी पहन रखी थी, जिससे उसका सौंदर्य और भी निखर आया था। वह दृश्य कबीर के दिल में छुपी प्रेम की चिंगारियों को हवा देने लगा।

उनकी निगाहें टकराईं, और बिना कहे हजारों शब्द उमड़ पड़े, जैसे उन्हें मुक्त होने की चाह हो। समय ठहर सा गया। कबीर तय नहीं कर पा रहा था कि वह सना के पास जाए या नहीं। लेकिन उसी क्षण, सना उठी, मुस्कुराई और कहा, "कबीर, कैसे हो!"

"हाय सना। कैसी हो?" कबीर ने पूछा, उसकी आवाज़ में सच्ची चिंता झलक रही थी।

"मैं ठीक हूँ, कबीर।" उसने इशारे से कबीर को अपने पास बैठने के लिए कहा।

कुछ क्षणों तक दोनों के बीच एक अजीब सी खामोशी छाई रही। फिर, सना ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा,

"क्या तुम अकेले आए हो? तुम्हारा परिवार कहाँ है?"

"हाँ, मम्मी-पापा अच्छे हैं। मेरी बहन की कुछ साल पहले शादी हो गई थी और अब वह बेंगलुरु में बस चुकी है। मैं नैनीताल छुट्टियाँ बिताने आया हूँ, प्रकृति की गोद में कुछ सुकून पाने के लिए। और तुम? तुम यहाँ अकेले क्यों बैठी हो?" कबीर ने पूछा।

सना ने बताया कि वह भी अकेले घूमने आई थी, नैनीताल की खूबसूरती में सुकून पाने के लिए।

"और तुम्हारे परिवार का क्या?" कबीर ने पूछा।

"अब कोई परिवार नहीं बचा, कबीर। पापा कुछ महीने पहले गुज़र गए, और माँ का निधन पाँच साल पहले हुआ था। मेरा छोटा भाई अमेरिका में काम करता है," सना ने जवाब दिया, उसकी आवाज़ में गहरी उदासी झलक रही थी।

"और तुम्हारे पति?" कबीर ने संकोच भरे स्वर में पूछा।

"वो रिश्ता परिवार की कुछ समस्याओं के कारण आगे नहीं बढ़ सका, कबीर। और फिर, मैंने कभी किसी और से शादी करने के बारे में सोचा ही नहीं," सना ने समझाया।

"लेकिन तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?" कबीर की आवाज़ में हल्की सी नाराज़गी थी।

"कैसे बताती, कबीर? मैंने अपने लिए तुमसे तुम्हारी खुशियों की कुर्बानी मांगी थी। मैं कैसे वापस आकर तुम्हारी ज़िंदगी में फिर से हलचल मचा सकती थी? वैसे, तुम्हारी पत्नी कैसी है? तुम्हारे कितने बच्चे हैं? मुझे यकीन है कि तुम्हारे तो आधा दर्जन बच्चे होंगे! तुम्हें हमेशा बच्चों से बहुत लगाव था!" सना ने चमकती आंखों से मुस्कुराते हुए कहा।

"कोई बच्चे नहीं हैं, सना। मैंने कभी किसी और से शादी करने का मन ही नहीं बनाया," कबीर ने स्वीकार किया।

"पर क्यों, कबीर?"

"मैं कभी अपने दिल में तुम्हारी जगह किसी और को नहीं दे पाया," कबीर ने कहा, और सना की आँखें नम हो गईं।

सालों से दबे हुए जज़्बात जैसे अचानक उमड़ पड़े।

आंसू सना के गालों पर ढुलकने लगे, जैसे उनके भीतर कैद हर भावना अब मुक्त हो गई हो।

कबीर ने सना के आंसू अपने हाथों से पोंछ दिए, उसका स्पर्श कोमल था, और उसमें ढेर सारा अपनापन भरा हुआ था।

"तुम बिल्कुल नहीं बदली हो," कबीर ने फुसफुसाया, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी।

"आज भी उतनी ही खूबसूरत और मोहक लग रही हो, जितनी पहली बार मिलने पर थी।"

"तुम्हारे बालों में हल्की सफेदी झलक रही है, लेकिन यह तुम्हें और भी आकर्षक बनाती है। यह तुम्हारी शाश्वत खूबसूरती को और निखार देती है।"

- सुशील कुमार

उप निदेशक

स्ट्रीट फोटोग्राफी - एक दर्शन

वैसे तो मैंने पूर्व के अंकों में भी फोटोग्राफी के विषय पर लिखा है, परंतु यह रचना उनसे थोड़ी अलग और खास इसलिए भी है, क्योंकि फोटोग्राफी की बहुसंख्यक धाराओं में स्ट्रीट फोटोग्राफी का विषय मेरे काफी करीब है। मौलिक रूप से तो इस विषय पर मैंने बहुत प्रतिक्रियाएं दी हैं, परंतु लेख के रूप में थोड़ा कठिन है। फिर भी मेरी पूरी कोशिश होगी कि यह लेख उबाऊ ना हो और पाठकों की दिलचस्पी बनी रहे। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मैं इस विषय का विशेषज्ञ हूं, पर अपनी जानकारी को ईमानदारी के साथ साझा करने का प्रयास जरूर है।

स्ट्रीट फोटोग्राफी मानवीय भावनाओं के सार को पकड़ने और छवियों के माध्यम से कहानियां बताने के बारे में है। स्पष्ट क्षणों की तलाश करें, जो खुशी, एकांत, आश्चर्य या किसी अन्य भावना व्यक्त करते हैं, जो आपके साथ प्रतिध्वनित होती है। लोगों के साथ जुड़े और वास्तविक अभिव्यक्तियों और भावनाओं को पकड़ने के लिए मानवीय संबंध बनाएं।

स्ट्रीट फोटोग्राफी एक शैली है, जो सर्वाजनिक स्थान पर रोजमर्रा की जिंदगी को रिकॉर्ड करती है। यह फोटोग्राफर को अक्सर अजनबियों की उनकी जानकारी के बिना स्पष्ट तस्वीरें लेने में सक्षम बनाती है। स्ट्रीट फोटोग्राफरों के मन में सामान्यत: आवश्यक रूप से कोई सामाजिक उद्देश्य नहीं होता है, लेकिन वे उन क्षणों को अलग करना और कैद करना पसंद करते हैं, जिन पर अन्यथा किसी का ध्यान नहीं जाता।

स्ट्रीट फोटोग्राफी अगर आसान शब्दों में कहूं तो उस क्षण को कैद करने के बारे में है, जो पहले से ही मौजूद है। उस क्षण को कैद करते समय रचना के बारे में सोचना मुश्किल लग सकता है। आप उन बहुमूल्य क्षणों की योजना नहीं बना सकते, लेकिन आप दृश्य ढूंढ सकते हैं और दिलचस्प क्षणों के सामने आने की प्रतीक्षा कर सकते हैं। अनुभव के साथ आप यह भी देख सकते हैं कि रचना को शीघ्रता से सुधारने के लिए आप अपने दृष्टिकोण से कौन से छोटे-मोटे समायोजन कर सकते हैं।

स्ट्रीट फोटोग्राफी का सबसे अहम पहलू है, एक अच्छा दृश्य ढूंढना। सड़क पर हजारों-लाखों परिदृश्य निरंतर घटित होते रहते हैं और उन परिस्थितियों में एक अच्छे दृश्य की तलाश करना संभवत: भूसे में सूई ढूंढने के समान है। परंतु एक अच्छा और अनुभवी फोटोग्राफर उन असंख्य परिदृश्यों में भी एक दृश्य ढूंढ निकालता है। इसके लिए कुछ जरूरी तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है, जैसे कि प्रकाश की स्थितियां कैसी हैं, और दिन के अलग-अलग समय में प्रकाश कैसा हो सकता है। एक ही स्थान पर कई बार जाना भी कई मायनों में अच्छा हो सकता है; आप उस क्षेत्र को अच्छी तरह जान जाते हैं। आप जानते हैं कि चीजें कहां घटित हो सकती हैं और आप जानते हैं कि खुद को कहां रखना है। रूचि के किसी बिंदु के बिना, कोई तस्वीर आसानी से उबाऊ हो सकती है। दर्शक को कुछ ऐसा चाहिए, जो ध्यान आकर्षित करे। बहुत सारी स्ट्रीट की तस्वीरों में रूचि के स्पष्ट बिंदु का अभाव होता है। यदि आप शानदार तस्वीरें देखते हैं तो उनमें से अधिकांशत: में रूचि का होना एक मजबूत बिंदु होता है - कुछ ऐसा जिसे आप तुरंत समझ जाते हैं कि यही वह मुख्य उद्देश्य है।

स्ट्रीट फोटोग्राफी को कभी-कभी कैंडिड फोटोग्राफी भी कहा जाता है। हालांकि स्ट्रीट और कैडिंड फोटोग्राफी के बीच अंतर है। यह आमतौर पर अत्यंत सूक्ष्म होता है, क्योंकि अधिकांश स्ट्रीट फोटोग्राफी कैंडिड प्रकृति की होती है और कुछ कैंडिड फोटोग्राफी को स्ट्रीट फोटोग्राफी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। स्ट्रीट फोटोग्राफी के लिए किसी सड़क या यहां तक कि शहरी वातावरण की उपस्थिति की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि लोग आमतौर पर प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित होते हैं, स्ट्रीट फोटोग्राफी में यहां तक कि लोग अनुपस्थित भी हो सकते हैं और यह किसी वस्तु या वातावरण की हो सकती है, जहां छवि प्रतिकृति या सौंदर्य में एक निश्चित मानवीय चरित्र को प्रस्तुत करती है।

मेरी राय में, स्ट्रीट फोटोग्राफी आमतौर पर एक कहानी होनी चाहिए। अक्सर मैं अपनी तस्वीरों में रूचि और आश्चर्य के तत्व, विरोधाभास और समानताएं, रंगों, बनावट और जीवन के विभिन्न परिदृश्यों के बीच विशिष्टिताओं को शामिल करने का प्रयास करता हूं। मेरे लिए स्ट्रीट फोटोग्राफी सड़क पर लोगों और दृश्यों की तस्वीरें खींचने से कहीं आगे तक जाती है। स्ट्रीट फोटोग्राफी के क्षण में सार, भावनाओं, कहानियों और संस्कृति की पकड़ शामिल होनी चाहिए। स्ट्रीट फोटोग्राफरों को उन स्थानों और लोगों के आसपास की संस्कृति, इतिहास और सामाजिक मुद्दों की सराहना करनी चाहिए, जिनकी वे तस्वीरें लेते हैं। स्ट्रीट फोटोग्राफी के लिए जुनून और अवलोकन आवश्यक है। सड़क पर तस्वीरें लेना बहुत आसान है, लेकिन एक ऐसी तस्वीर प्राप्त करना जो अपने आप में अनूठी हो अथवा एक कहानी कहती हो और उस पल को पकड़ने के लिए समय की आवश्यकता होती है। जैसे मछली पकड़ने हम अपने कौशल और उपकरणों के साथ तालाब तक जाते हैं, लेकिन हमें नहीं पता होता कि आज हमें क्या मिलेगा और हम परिणाम प्राप्त करने के लिए सहनशीलता के साथ नदी किनारे बैठते हैं। सड़क पर फोटोग्राफर ऐसे कलाकार होते हैं, जिनका उद्देश्य कलात्मक चित्र या सामाजिक इतिहास का विश्वसनीय रिकॉर्ड बनाना होता है। मुझे तस्वीरों के बारे में जो पसंद है, वह यह कि वे उस पल को कैद कर लेते हैं, जो हमेशा के लिए चला गया है और जिसे दोबारा बना पाना असंभव है।

एक साधारण दृश्य को असाधारण बनाना ही एक स्ट्रीट फोटोग्राफर की असली परीक्षा होती है। हर दिन एक बेहतरीन शॉट लगाना, मास्टर्स के लिए भी आसान नहीं है। प्रकृति का अनुसरण करना आसान है, बनाना आसान नहीं है। अपने काम में मौलिक होने के लिए व्यक्ति को एक व्यक्ति के रूप में भी मौलिक होना चाहिए। अपने आप को उत्कृष्ट बनाना एक बहुत बड़ा सिरदर्द है और व्यक्ति के पास उन दुर्लभ, जादुई क्षणों को पकड़ने के लिए सजगता, वृत्ति और प्रत्याशा होनी चाहिए। पूर्व निर्धारित रोशनी और जगह पर शूट करना आसान है, लेकिन एक ही प्रयास में तुरंत रचना करना आसान नहीं।

अंतत: मैं यही कहना चाहूंगा कि स्ट्रीट फोटोग्राफी सिर्फ एक कला नहीं है अपितु यह एक दर्शन है, जो लागों के समय और क्षणों को संरक्षित कर दुनिया को उसी तरह वर्णित करती है।

- आमोद कुमार
सहायक निदेशक

नजरिए का महत्व

थिंक एंड ग्रो रिच और कई अन्य किताबो के लेखक नेपोलियन हिल का कहना है कि हर समस्या अपने साथ अपने बराबर का या अपने से भी बड़ा अवसर साथ लाती है।

संस्थाओं के लिए नजरिए का महत्त्व

THE IMPORTANCE OF ATTITUDE TO ORGANISATIONS

क्या आपको कभी इस बात पर हैरानी हुई है कि कुछ लोग, संस्थाएं या देश दूसरों के मुक़ाबले अधिक क़ामयाब क्यों होते हैं? इसमें कोई राज़ नहीं छिपा है। वे इसलिए कामयाब होते हैं कि वे दूसरों के मुक़ाबले अधिक असरदार ढंग से सोचते और काम करते हैं। वे अपनी सबसे क़ीमती जायदाद, यानी लोगों में निवेश करते हैं। मैंने दुनिया की कई बड़ी कार्पोरेशनों के आला अफ़सरों से बात की, और उनसे पूछा "अगर आपके पास जादू की छड़ी हो, और आपको केवल एक ऐसी चीज़ बदलनी हो, जिससे आपको तरक्की मिल जाए, साथ ही उत्पादकता और लाभ भी बढ़ जाए तो आप किस चीज़ को बदलना चाहेंगे?" सबका जवाब एक ही था। उनका कहना था कि वे अपने लोगों का नज़रिया बदलना चाहेंगे। नज़रिया बेहतर होने पर लोगों में टीमभावना बढ़ेगी, बरबादी कम होगी, और वे ज़्यादा वफ़ादार हो जाएंगे। कुल मिलाकर उनकी कंपनी में काम करने का बेहतर माहौल बन जाएगा। तज़रबा बताता है कि किसी भी व्यापार की सबसे क़ीमती पूँजी उससे जुड़े लोग होते हैं। पूँजी या औज़ारों से लोगों की क़ीमत अधिक होती है । बदक़िस्मती से सबसे ज्यादा मानव-संसाधन ही व्यर्थ या बेकार चला जाता है। लोग आपकी सबसे बड़ी संपत्ति बन सकते हैं, या सबसे बड़ा बोझ भी बन सकते हैं।

टीक्यू पी – सारी ख़ूबियों वाले लोग

TQP- TOTAL QUALITY PEOPLE

बहुत सारे ट्रेनिंग प्रोग्राम जैसे कि कस्टमर सर्विस, सेलिंग स्किल्स और स्ट्रेटेजिक प्लानिंग के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इनमें से ज्यादातर कार्यक्रम काफी अच्छे होते हैं, लेकिन इनके सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। इनमें से कोई भी तब तक क़ामयाब नहीं हो सकता, जब तक उनकी बुनियाद सही न हो और वह सही बुनियाद है; टीक्यूपी। यह टीक्यूपी क्या है? इसका मतलब है - टोटल क्वॉलिटी पीपॅल, यानी सारी खूबियों से भरे लोग । यानी वे लोग जो अच्छे चरित्र वाले, ईमानदार, नैतिक मूल्यों और सकरात्मक नजरिए वाले लोग होते हैं।

मुझे गलत न समझें। आपको दूसरे सारे प्रोग्रामों की जरूरत है लेकिन वे तभी सफ़ल होंगे, जब आपकी नींव सही होगी और वह नींव है - टीक्यूपी । उदाहरण के तौर पर कुछ ग्राहक-सेवा कार्यक्रमों में हिस्सेदारी करने वालों को "प्लीज़" या "थैंक यू" कहना, मुस्कराना और हाथ मिलाना सिखाया जाता है; लेकिन किसी आदमी में सेवा करने का जज्बा ही न हो, तो वह कब तक मुस्करा सकता है? इसके अलावा लोग नक़ली मुस्कान को पहचान जाते हैं और अगर मुस्कान सच्ची न हो, तो उसे देखकर चिढ़ पैदा होती है। मेरा कहना यह है कि असलियत को दिखावे पर हावी होना चाहिए, न कि दिखावे को असलियत पर । बेशक,

ग्राहकों से पेश आने वाले लोगों को "प्लीज़" और "थैंक यू" कहना चाहिए, और मुस्कराना चाहिए। ये बातें महत्त्वूपर्ण है। लेकिन याद रखें कि अगर मन में सेवा करने की भावना हो, तो आम जिंदगी में ये बातें ख़ुद-ब-खुद आसानी से शामिल हो जाते हैं।

एक बार एक आदमी मशहूर फ्रांसीसी दार्शनिक ब्लेज़ पास्कल से मिला, और उनसे कहा - "अगर मेरे पास आपके जैसा दिमाग़ हो, तो मैं बेहतर इंसान बन जाऊँगा।" इस पर पास्कल ने जवाब दिया- "बेहतर इंसान बनो, तुम्हारा दिमाग खुद-ब-खुद मेरे जैसा हो जाएगा ।"

महान संगठनों को तनख़्वाहों या काम करने के हालात के पैमाने पर नहीं आँका जाता है। उन्हें भावना, नजरिए और आपसी संबंधों के पैमानों पर आँका जाता है। जब कर्मचारी कहते हैं, "मैं यह काम नहीं कर सकता", तो इसके दो मायने हो सकते हैं - या तो उनका मतलब है कि उन्हें वह काम करने का तरीका मालूम नहीं है, या फिर वे उस काम को करना नहीं चाहते हैं। अगर वे काम करने का तरीका नहीं जानते हैं, तो यह टेक्निकल ट्रेनिंग का मुद्दा है, लेकिन अगर वे काम नहीं करना चाहते हैं, तो यह नजरिए से जुड़ा मुद्दा हो सकता है (उन्हें उस काम की परवाह नहीं है), या वह नैतिकता का मुद्दा हो सकता है (वे मानते हैं कि उन्हें वह काम नहीं करना चाहिए)

केलगेरी टॉवर की ऊँचाई 190.8 मीटर है। उसका कुल वजन 10,884 टन है। उसमें से 6,349 टन (कुल वजन का लगभग 60 प्रतिशत भाग) वजन ज़मीन के अंदर है। इससे जाहिर होता है कि भव्य दिखने वाली कई इमारतों की नींव काफ़ी मजबूत होती है। जिस तरह किसी भव्य इमारत के टिके रहने के लिए उसकी नींव मजबूत होनी चाहिए, उसी तरह कामयाबी के टिके रहने के लिए भी मजबूत बुनियाद की जरूरत होती है और क़ामयाबी की बुनियाद होती है नजरिया ।

संपूर्णतावादी नज़रिया

A HOLISTIC APPROACH

मैं संपूर्णतावादी नज़रिए में यकीन रखता हूँ। हम केवल हाथ, पाँव, आँख, कान, दिल और दिमाग नहीं, बल्कि एक संपूर्ण इंसान हैं। काम करने के लिए एक पूरा आदमी जाता है, और काम करके एक पूरा आदमी लौटता है। घर की परेशानियाँ हमारे कामकाज पर, और कामकाज से जुड़ी परेशानियाँ हमारी पारिवारिक जिंदगी पर असर डालती हैं। पारिवारिक समस्याओं की वजह से तनाव का शिकार होने पर हमारी उत्पादकता घट जाती है। इसी तरह कामकाज से जुड़ी परेशानियाँ न केवल हमारे परिवार, बल्कि जिंदगी के हर पहलू पर असर डालती हैं। निजी, पेशे से जुड़ी और सामाजिक समस्याएँ एक-दूसरे पर लाज़िमी तौर पर असर डालती हैं।

आपके नज़रिए को तय करने वाले कारक

FACTORS THAT DETERMINE YOUR ATTITUDE

मैं आपसे कुछ सवाल पूछता हूँ - हम नज़रिए के साथ ही जन्म लेते हैं, या उसे बड़ा होने पर विकसित करते हैं? हमारा नज़रिया किन चीजों से बनता है? अगर माहौल की वजह से जिंदगी के बारे में आपका नजरिया नकारात्मक हो गया है, तो क्या आप उसे बदल सकते हैं? दरअसल हमारे नज़रिए का ज्यादातर हिस्सा हमारी जिंदगी के शुरूआती सालों में ही बन जाता है। यह सच है कि हम अपने मिज़ाज की कुछ खासियतों के साथ पैदा होते हैं, लेकिन बाद में हमारा जो नज़रिया बनता है, उसे खास तौर से ये तीन चीजें तय करती हैं -

1. माहौल (Environment)

2. तज़रबा (Experience)

3. शिक्षा (Education)

इन्हें हम नज़रिए के ती 'Es' कह सकते हैं। अब इन तीनों पर नजर डालते हैं।

1.**माहौल (Environment)**

माहौल में ये चीजें शामिल होती हैं –

- घर - अच्छा या बुरा असर
- स्कूल के साथियों का दबाव
- काम में मददगार या ज़रूरत से अधिक नुक्ताचीनी करने वाला सुपरवाइज़र
- मीडिया - टेलीविजन, अख़बार, पत्रिकाएँ, रेडियो, फिल्में
- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- धार्मिक पृष्ठभूमि
- परंपराएँ और मान्यताएँ
- सामाजिक माहौल
- राजनीतिक माहौल

ऊपर बताए गए सारे माहौल मिल कर हमारी तहजीब बनाते हैं। घर हो, संस्था हो, या देश हो हर जगह की अपनी एक तहज़ीब होती है। उदाहरण के तौर पर, आप एक स्टोर में जाते हैं, तो वहाँ के मैनेजर से लेकर सेल्स क्लर्क तक को विनम्र, मददगार, दोस्ताना और खुशमिजाज़ से भरा पाते हैं; फिर आप दूसरी दुकान में जाते हैं, तो वहाँ काम करने वालों को रूखा और बदतमीज़ पाते हैं।

आप एक घर में जाते हैं, तो वहाँ माँ-बाप और बच्चों को तमीज़वाला, मिलनसार और दूसरों का ख़्याल रखने वाला पाते हैं, जबकि दूसरे घर में जाने पर हर आदमी को कुत्ते-बिल्लियों की तरह आपस में लड़ता पाते हैं।

जिन देशों की सरकारों और राजनीतिक माहौल में ईमानदारी होती है, वहाँ के लोग भी आम तौर पर ईमानदार, कानून का पालन करने वाले और मददगार होते हैं। इसका उलटा भी उतना ही सही है। जिस तरह बेईमान और भ्रष्ट माहौल में एक ईमानदार आदमी का जीना मुश्किल हो जाता है, उसी तरह ईमानदारी से भरे माहौल में बेईमान व्यक्ति को मुश्किल होती है। *अच्छे माहौल में मामूली कर्मचारी की भी काम करने की शक्ति बढ़ जाती है, जबकि बुरे माहौल में अच्छा काम करने वाले की काम करने की शक्ति घट जाती है।*

तहज़ीब कभी नीचे से ऊपर की ओर नहीं जाती है बल्कि वह हमेशा ऊपर से नीचे की ओर आती है। हमें पीछे मुड़ कर देखना चाहिए कि हमने खुद के लिए और अपने आसपास के लोगों के लिए कैसा माहौल तैयार किया है। बुरे माहौल में लोगों से अच्छे व्यवहार की आशा नहीं की जा सकती। जहाँ कानून का न होना ही कानून बन जाता हो, वहाँ ईमानदार नागरिक भी चोर, उचक्के और बेईमान हो जाते हैं। कुछ समय निकाल कर इस बात का गौर कीजिए कि हमारा माहौल हम पर कैसे असर डालता है, और हम जो माहौल तैयार करते हैं, वह दूसरों पर कैसे असर डालता है?

2. तज़रबा (Experience)

अलग-अलग लोगों से मिले तजरबे के मुताबिक हमारा व्यवहार भी बदल जाता है। अगर किसी इंसान के साथ हमें अच्छा अनुभव मिलता है, तो उसके बारे में हमारा नजरिया अच्छा होता है, पर बुरा अनुभव मिलने पर हम सावधान हो जाते है। अनुभव और घटनाएँ हमारी जिंदगी के संदर्भ बिंदु बन जाते हैं। हम उनसे नतीजे निकालते हैं, जो भविष्य के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं।

3. शिक्षा (Education)

शिक्षा औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों तरह की होती है । आजकल हमलोग सूचनाओं के सागर में गोते लगा रहे हैं, लेकिन ज्ञान और समझदारी का अकाल पड़ा हुआ है। ज्ञान को योजनाबद्ध ढंग से समझदारी में बदला जा सकता है, और समझदारी हमें क़ामयाबी दिलाती है।

शिक्षक की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण होती है। उसका प्रभाव अनंत काल तक रहता है। इसके असर की लहरें अनगिनत हैं। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो हमें केवल रोजी-रोटी कमाना नहीं बल्कि जीने का तरीका भी सिखाए।

सकारात्मक नज़रिए वाले लोगों को कैसे पहचानें?

HOW DO YOU RECOGNISE PEOPLE WITH A POSITIVE ATTITUDE?

जिस तरह सेहत खराब न होने का मतलब अच्छी सेहत नहीं होता, उसी तरह किसी इंसान के नकारात्मक न होने का मतलब यह नहीं होता कि वह सकारात्मक है।

सकारात्मक नजरिए वाले लोगों की शख़्सियत में कुछ ऐसी खासियतें होती हैं, जिनकी वजह से उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। ऐसे लोग दूसरों का ख़्याल रखने वाले, आत्मविश्वास से भरे, धीरज वाले और विनम्र होते हैं। ये लोग खुद से, और दूसरों से काफी ऊँची उम्मीदें रखते हैं, उन्हें अच्छे नतीजे हासिल होने की आशा रहती है।

सकारात्मक नज़रिए वाला आदमी हर मौसम में फलने वाले (बारहमासी फल) जैसा होता है। उसका हमेशा स्वागत किया जाता है।

सकारात्मक नज़रिए के फ़ायदे

THE BENEFITS OF A POSITIVE ATTITUDE

सकारात्मक नजरिए के कई फ़ायदे होते हैं। इन्हें आसानी से देखा जा सकता है। लेकिन आसानी से दिखाई देनी वाली चीज़ को उतनी ही आसानी से अनदेखी भी कर दिया जाता है।

सकारात्मक नज़रिया

आपके लिए फ़ायदेमंद ---

- शख़्सियत खुशनुमा हो जाती है
- जोश पैदा होता है
- ज़िंदगी का आनंद बढ़ जाता है

- आपके अगल-बगल के लोगों को प्रेरणा मिलती है
- आप समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले सदस्य और राष्ट्र की संपत्ति बन जाते हैं।

संस्थाओं के लिए –

- उत्पादकता बढ़ जाती है
- टीमभावना बढ़ती है
- समस्याएँ हल हो जाती हैं
- गुणवत्ता बढ़ जाती है
- माहौल आपके मुताबिक बनता है
- वफ़ादारी बढ़ती है .
- लाभ ज्यादा मिलता है
- मालिक, कर्मचारी और ग्राहक के बीच बेहतर संबंध बनते हैं
- तनाव कम होता है।

नकारात्मक नज़रिए के नतीजे

THE CONSEQUENCES OF A NEGATIVE ATTITUDE

जिदगी की राह रुकावटों से भरी पड़ी है, और अगर हमारा नज़रिया नकारात्मक हो, तो अपने लिए सबसे बड़ी रुकावट हम खुद बन जाते हैं। नकारात्मक नजरिए वाले लोगों के लिए दोस्ती, नौकरी, शादी और संबंधों को क़ायम रख पाना काफी मुश्किल होता है। नकारात्मक नज़रिए की वजह से –

- संबंधों में कड़वाहट बढ़ती है
- लोग नाराज़ रहते हैं
- जिदगी बेमकसद हो जाती है
- सेहत खराब रहती है
- ख़ुद के लिए, और दूसरों के लिए तनाव बढ़ाता है

नकारात्मक नज़रिए की वजह से घर और कामकाज की जगह का माहौल बिगड़ जाता है। ऐसा आदमी समाज के लिए बोझ बन जाता है। ये लोग अपने नकारात्मक नज़रिए को छुआछूत रोग की तरह अपने आसपास के लोगों और आने वाली पीढ़ियों तक फैला देते हैं।

अपने नकारात्मक नज़रिए से वाकिफ़ होने के बावजूद हम उसे बदलते क्यों नहीं हैं?

WHEN WE BECOME AWARE OF OUR NEGATIVE ATTITUDE, WHY DON'T WE CHANGE?

इंसान का स्वभाव आम तौर पर बदलाव-विरोधी होता है। हमें बदलाव तकलीफदेह लगता है। बदलाव का नतीजा अच्छा हो, या बुरा, पर अकसर इससे तनाव बढ़ता है। कई बार हम अपनी बुराईयों के साथ जीने में इतना आराम महसूस करते हैं कि बेहतरी के लिए होने वाले बदलावों को भी क़बूल नहीं करना चाहते। हम बुरे ही बने रहना चाहते हैं।

चार्ल्स डिकेंस ने एक ऐसे कैदी के बारे में लिखा है, जो सालों तक एक काल कोठरी में कैद रहा। सजा काट लेने के बाद उसे आज़ाद कर दिया गया। उसे काल कोठरी से बाहर खुली धूप में लाया गया। उस आदमी ने अपने चारों ओर देखा। कुछ देर में ही वह अपनी इस नई आज़ादी से परेशान हो गया। उसने वापस काल कोठरी में जाने की इच्छा जाहिर की। वह आज़ादी और खुली दुनिया के बदलावों को क़बूल करने के बजाए काल कोठरी, अंधेरे और हथकड़ियों में ही सुरक्षा और आराम महसूस कर रहा था, क्योंकि वह उन्हीं का आदी हो चुका था।

इन दिनों भी कई कैदी ऐसा ही व्यवहार करते हैं। एक अनजाने संसार के साथ तालमेल कायम करने का तनाव उनकी बर्दाश्त से बाहर होता है; इसलिए वे जानबूझ कर और अपराध करते हैं, ताकि उन्हें वापस जेल में भेज दिया जाए । वहाँ उनकी आज़ादी पर भले ही पाबंदी रहती हो, लेकिन उन्हें अपने बारे में कम फैसले लेने पड़ते हैं।

अगर हमारा नज़रिया नकारात्मक है, तो हमारी जिंदगी सीमाओं में कैद है। ऐसे नज़रिए की वजह से हमको अपने काम में सीमित क़ामयाबी ही मिल सकेगी । हमारे दोस्तों की तादाद कम होगी, और हम जिंदगी का कम आनंद उठा पाएँगे।

- हर्षद सोलंकी

सहायक निदेशक

(श्री शिव खेड़ा की पुस्तक 'यू कैन विन' से साभार)

जीवन की नदी

जीवन भी एक नदी है!
ज्यों निकलती पहाड़ों की गोद से
चीखती, उछल-कूद करती हुई
कल-कल का अनहद शोर मचाती
मन भी उतना ही चंचल
बालपन में
बहता है अपनी ही रौ में
लगता है उसे स्वयं का दिशा-ज्ञान नहीं है
पर क्या कभी बताया किसी ने
नदी को रास्ता?
उस ने स्वयं ही ढूंढा स्वयं को
स्वयं ही पहुंचाया स्वयं को
अपने समंदर तक!
जब गुजर जाता है पहाड़ी रास्ता
उबड़-खाबड़ पठार
और आ जाता है विशाल मैदान
नदी भी ठहर कर सोचती होगी?
इसी ध्यान में ही तो नहीं
कि वो गहरी और विशाल होती जाती है!
धीर-गंभीर चिंतामग्न, किस सोच में लीन!
कहीं मन में उसके उमड़ तो नहीं आया है
परोपकार का भाव?
जीवनदान-अभयदान देने वाली ममतामयी मां का
रूप धर वह स्वयं को ही देने का भाव रखती है!
जीवन का यौवन बीत जाने से पहले
अगर हो थोड़ा चिंतन भी नदी जैसा
जीवन की मध्यावस्था भी होती है
थोड़ी चिंतनशील-विचारमग्न
पर क्या सचमुच नदी की तरह?

आंसू

कौन कहता है, आंसू सिर्फ पानी है
और कमजोरी की निशानी है!

आंसू जब प्यार में बहे
तो तख्त उजड़ जाते हैं
और बहे जब भक्ति में
तो भगवान दौड़े चले आते हैं

प्रेम और भक्ति का
निर्मल रूप है आंसू
गंगाजल सदृश शुद्धि का
साकार रूप है आंसू!

आंसू से मगर
छल मत करना प्यारे!
अश्रू-छल से जो जीते
वो जीत कर भी हारे!

- गीतांजलि अंतिल
सहायक निदेशक (रा.भा.)

भारतीय सांस्कृतिक विविधता

भारत एक ऐसा देश है, जिसमें विविधता का समृद्ध होना सामान्य है। यहां हर कोने में अलग-अलग संस्कृति तथा भाषाएं मिलती हैं, जो इसे विश्व में एक अद्वितीय स्थान पर प्रदान करती हैं। भारतीय सांस्कृतिक विविधता ने इसे अखिल विश्व में एकता में विविधता का उदाहरण बना दिया है।

पहले तो, भाषा के क्षेत्र में ही विविधता का स्वाद है। हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मराठी, पंजाबी, गुजराती, ओड़िया, मलयालम और अनेक अन्य भाषाएं यहां बोली जाती हैं। हर भाषा में अपनी अनूठी सुंदरता है, जो उसे अन्यों से अलग बनाती है। इन भाषाओं का असर भी भारतीय सांस्कृतिक कला, साहित्य और संगीत में दिखाई देता है।

सांस्कृतिक एकता के सबसे बड़े प्रतीक भारतीय उपमहाद्वीप में हर राज्य एक धरोहर है। हर राज्य में अपनी अनूठी परंपराएं रीति-रिवाज और विशेष आचार-विचार हैं, जिन्होंने उस स्थान को अनूठा बना दिया है। उत्तर भारत के लुधियाना में बैसाखी का त्योहार, पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा, साउथ इंडिया के पोंगल उत्सव ये सभी अपने-अपने अंदाज में मनाए जाते हैं और उस स्थान की विशेषता को प्रकट करते हैं।

भारतीय वस्त्र संस्कृति भी अद्वितीय है। साड़ी, सलवार-कमीज़, धोती, कुर्ता-पाजामा, टर्बन और बिंदी इन वस्त्रों में भारतीय सांस्कृतिक विविधता की छवि प्रतिष्ठित है। हर राज्य में अपने-अपने वस्त्र, वेशभूषाएं होती हैं, जो उसके लोगों के आचार-विचार और मौसम के अनुसार बदलते हैं।

भारतीय शैली में खानपान का भी एक अपना आलम है। सामान्यतः भारतीय खानपान में मीठा, तीखा और तैलीय होता है। उत्तर भारत में परांठे और मक्की की रोटियां प्रमुख हैं, साउथ इंडिया में दोसा और इडली पॉप्युलर है, पश्चिम बंगाल में माछेर झोल, गुजरात में ढोकला और फाफड़ा और राजस्थान में दाल-बाटी-चूरमा इस भौगोलिक विविधता को दर्शाते हैं।

संगीत, नृत्य और कला में भी भारतीय सांस्कृतिक विविधता दिखाई पड़ती है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कथक, भारतनाट्यम, कुछ भी ना बोलने वाले भावनात्मक नृत्य कथा, मोहिनीअट्टम, ये सभी भारतीय कला के विभिन्न पहलुओं को प्रतिष्ठित करते हैं। भारतीय सांस्कृतिक विविधता ने इसे एक ऐसे देश का रूप दिया है, जो विभिन्नता का समर्थन करता है और उसे समृद्धि की दिशा में बदलने में सक्षम है। यहां की भौगोलिक विविधता, भाषा और सांस्कृतिक विचारधारा में विविधता और खानपान की विविधता ने इसे एक अद्वितीय स्थान पर उच्च किया है। भारतीय सांस्कृतिक विविधता का यह सौंदर्य भारत को एक अद्भुत और समृद्ध समाज की ओर बढ़ाता है।

- शायनी थॉमस
कार्यालय अधीक्षक

आँख मूंदकर देखना

आँख बंद कर लेने से,
अंधे की दृष्टि नहीं पाई जा सकती।
जिसके टटोलने की दूरी पर है संपूर्ण,
जैसे दृष्टि की दूरी पर।

अँधेरे में बड़े सवेरे एक खग्रास सूर्य उदय होता है।
और अंधेरे में एक गहरा अँधेरा फैल जाता है,
चाँदनी अधिक काले धब्बे होंगे,
चंद्रमा और तारों के।

टटोलकर ही जाना जा सकता है क्षितिज को,
दृष्टि के भ्रम को
कि वह किस आले में रखा है,
यदि वह रखा हुआ है।
कौन से अंधेरे सींके मे टंगा हुआ रखा है।
कौन से नक्षत्र का अंधेरा।

आँख मूंदकर देखना
अंधे की तरह देखना नहीं है।
पेड़ की छाया में व्यस्त सड़क के किनारे
तरह-तरह की आवाजों के बीच
कुर्सी बुनता हुआ एक अंधा
संसार से सबसे अधिक प्रेम करता है।
वह कुछ संसार स्पर्श करता है और
बहुत संसार स्पर्श करना चाहता है।

तुमसा जहां कहीं न मिलता

ढूंढे नहीं मिलता सारा जहां,
ढूंढा मगर, तुमसा कहीं ना मिलता,
होकर जुदा फुरसत में रूखसत हुए.
गिन-गिन बसर किये दिन,
तुमसा जहां कहीं नहीं मिलता।

महज कल ही की बात है,
तुमसे हम मिले थे,
है बस, गम बिछड़ने का,
हम रूखसत हो चले।

यूं तो काम चलता रहेगा,
सूरज समय पर ढलता रहेगा,
हम-तुम थे जहां वो बागबान था हमारा,
कर्मभूमि से जाना था एक दिन,
आज आ गया समय हमारा।

है आँखों में समंदर अश्कों का,
मोती नहीं छलकने दूंगी,
रास्ते कठिन पार हुए,
मन कभी न भटकने दूंगी,
है विश्वास और आशा मुझको,
नैया जीवन की पार लगा ही लूँगी।

- संगीता लिखार
कार्यालय अधीक्षक

सोशल मीडिया के युग में फर्जी खबरें

झूठी जानकारी या दुष्प्रचार, मनगढ़ंत जानकारी है जिसे सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। झूठी सूचना या दुष्प्रचार एक द्वेष है जिसे सोशल मीडिया ने और खराब कर दिया है। पिछले कुछ वर्षों में इसका इस्तेमाल समुदायों और धर्मों के ध्रुवीकरण के लिए किया गया है। चौंकाने वाली बात यह है कि नकली समाचार वास्तविक समाचारों की तुलना में छह गुना तेजी से फैल सकते हैं, जैसा कि एमआईटी द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चलता है।

झूठी सूचना जानबूझकर वायरल करने के लिए बनाई जाती है। इसके निर्माता चाहते हैं कि यह व्यवस्थित और तेजी से फैले। आजकल सोशल मीडिया वॉर रूम बन गया है। इसके परिणाम भारत में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। इसका प्राथमिक कारण मजबूत भावनात्मक प्रतिक्रिया है, (जो अक्सर नकारात्मक होती है), जो ऐसी सामग्री से उत्पन्न होती है। लाभ के लिए दुष्प्रचार फैलाया जा सकता है, धर्म को भड़काया जा सकता है और राजनीतिक मुद्दे उठाए जा सकते हैं। नकली कहानियां ध्यान आकर्षित करने और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ भड़काने के लिए बनाई जाती हैं।

अफवाहें हमारे दैनिक जीवन में अपनी जड़ें फैला रही हैं। हम उसी पर विश्वास कर लेते हैं, जो हमें दिखाया जाता है। आजकल अफवाहे गेमिंग चैट सेक्शन जैसे छोटे प्लेटफॉर्म में या न्यूजलेटर के रूप में हो रही हैं। हालांकि कुछ कंपनियां इसके खिलाफ कार्रवाई कर रही हैं, फिर भी कुछ समुदाय और व्यक्ति हैं, जो झूठी खबरें फैलाने का तरीका ढूंढते हैं।

अब सवाल उठता है कि इससे निपटने के लिए क्या किया जा सकता है? अगर हम व्यक्तिगत आधार पर बात करें, तो जो सामग्री हमें नकली लगती है, उसे कई प्लेटफार्मों पर साझा करने के बजाय हम उसकी रिपोर्ट करके इसे नियंत्रित कर सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि हम सूचना उपभोग और साझा करने में तर्कसंगत सोच का उपयोग करें। मेटा और यूट्यूब आदि जैसी सोशल मीडिया कंपनियां राजस्व उत्पन्न करने के लिए इसे बढ़ावा देने के बजाय सूचना को अवरुद्ध करने के लिए एल्गोरिदम को बदल सकती हैं। सरकारें नीतियां बना सकती हैं, सख्त कार्रवाई कर सकती हैं, और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि तथ्यों की जांच हो।

झूठी खबरों की समस्या के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए एक वैश्विक, जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता होगी जो ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं को डिजिटल सामग्री का उपभोग और साझा करते समय तर्कसंगत रूप से सोचने के लिए 'शिक्षित' करे।

-मनीषा

कार्यालय अधीक्षक

महाराष्ट्र की वारली पेंटिंग

वारली पेंटिंग महाराष्ट्र के आदिवासियों की बहुत ही अनोखी और खूबसूरत कला है।

यह पेंटिंग ज़्यादातर महाराष्ट्र, भारत के आदिवासी लोगों द्वारा बनाई जाती है। खास तौर पर पालघर जिले के दहानू, तलासरी, जव्हार, पालघर, मोखाडा और विक्रमगढ़ जैसे शहरों में। इस आदिवासी कला की उत्पत्ति महाराष्ट्र में हुई थी, जहाँ आज भी इसका अभ्यास किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसकी शुरुआत 10वीं शताब्दी ई. में हुई थी।

अपने मूल रूप में इसे चावल और पानी से बने सफ़ेद पेस्ट से झोपड़ियों और भूरे रंग की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता था। आजकल इसे आधुनिक रंगों से बनाया जाता है। महाराष्ट्र में अलग-अलग जनजातियाँ हैं, जैसे वारली, कोकना, महादेव कोली, कटकरी, भील, ठाकुर आदि। वारली उनमें से एक है। वारली पेंटिंग वारली जनजाति से जुड़ी हुई है, लेकिन आजकल यह मुख्य रूप से महाराष्ट्र के पालघर जिले और देश के अन्य कुछ हिस्सों में भी जनजातियों द्वारा प्रचलित है।

आदिवासियों की जीवनशैली प्रकृति के इर्द-गिर्द घूमती है। वे मुख्य रूप से प्रकृति के उपासक हैं। उनकी विशिष्ट संस्कृति, परंपराएं, कला प्रकृति के प्रति प्रेम और सम्मान को दर्शाती हैं। यह वारली चित्रकला में भी देखा जाता है। वे त्रिभुज, वृत्त और वर्ग जैसे ज्यामितीय पैटर्न का उपयोग करते हैं। त्रिभुज पहाड़ों को दर्शाते हैं। वृत्त सूर्य और चंद्रमा को दर्शाता है और वर्ग भूमि के घेरे को दर्शाता है। जिस चौक पर पेंटिंग बनाई जाती है उसे स्थानीय वारली भाषा में 'चौक' कहा जाता है। इसे बहुत पवित्र माना जाता है। मुख्य रूप से दो प्रकार के चौक होते हैं (1) देवचौक और (2) लग्नचौक। इन दोनों को विवाह समारोह में भी दीवार पर चित्रित किया जाता है। देवचौक के अंदर देवी 'पालघाट' की पेंटिंग बनाई जाती है, जिन्हें "उर्वरता की देवी" माना जाता है।

अन्य लोकप्रिय चित्रों में वारली लोगों की जीवनशैली को दर्शाया गया है। उनकी जीवनशैली में खेती, पशुपालन, अन्य दैनिक गतिविधियाँ और तरपा पर नृत्य शामिल हैं; जहाँ पुरुष और महिलाएँ दोनों भाग लेते हैं और एक बड़ा घेरा बनाकर नृत्य करते हैं। वे अपनी जीवनशैली के लगभग हर पहलू, परंपरा और अनुष्ठान पर पेंटिंग बनाते हैं। वर्तमान में वारली पेंटिंग दुनिया भर में जानी जाती है। इसे देश की विभिन्न महत्वपूर्ण इमारतों पर चित्रित देखा जा सकता है। इसका उपयोग विभिन्न अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुओं जैसे कपड़े, मग, बैग, बर्तन आदि पर किया जाता है। श्री जिव्या सोमा म्हसे को आधुनिक वारली पेंटिंग का जनक माना जाता है, क्योंकि उन्होंने केवल अनुष्ठानों के लिए नहीं बल्कि अपने आनंद के लिए पेंटिंग करना शुरू किया था। उनसे पहले यह पेंटिंग केवल अनुष्ठानों तक ही सीमित थी। उन्होंने सन् 1970 के दशक में व्यावसायिक पेंटिंग बनाकर इसे और अधिक लोकप्रिय बनाया। अपने काम के लिए उन्होंने सन् 2011 में पद्म श्री सहित कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। इसे और बढ़ावा देने तथा इसे आगे संरक्षित करने के लिए भारत सरकार विभिन्न प्रयास कर रही है। आदिवासी समुदायों के लोग भी इसे संरक्षित करने के लिए इस पेंटिंग का भौगोलिक संकेत टैग (जीआई टैग) प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

- रवि तेलवड़े
कार्यालय अधीक्षक

एक सैनिक की कलम से

सैनिक शब्द मात्र से ही मन में एक अलग तस्वीर का खाका खिंच जाता है। सैनिक, अर्थात एक वैसी सजीव आकृति जिसका फौलादी जिस्म, बारूदी तेज व बिजली जैसी फुर्ती हो। इस तरह की आम अवधारणा हम अक्सर एक सैनिक के लिए रखते ही हैं। होनी भी चाहिए। क्योंकि किसी भी आम इंसान से सैनिक बनने का जो सफर होता है, वो इतना आसान नहीं है। जब एक आम आदमी आपनी जिंदगी का बसंत अर्थात युवावस्था के आगोश में मदमस्त जी रहा होता है, उस वक्त सैनिक अपने जिस्म को तराश रहा होता है, ताकि आने वाले भविष्य में यह राष्ट्र की रक्षा देश के बाहरी दुश्मनों से कर सके। एक भूतपूर्व सैनिक होने के नाते मेरे मन में आज यह ख्याल आया है कि आम इंसान से सैनिक तक के सफर की छोटी-सी झलक मैं अपनी इस छोटी-सी रचना के माध्यम से पाठकों तक पहुंचा सकूं।

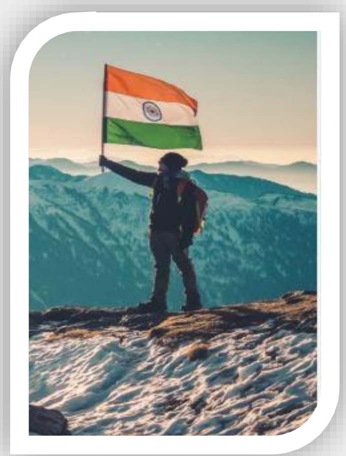

जी हां, एक सैनिक बनने की सबसे पहली कड़ी देश सेवा का जज्बा होता है। वही युवक सैनिक बन सकता है, जिसके भीतर देश-सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हो, अन्यथा प्रशिक्षण के दरम्यान ही रण छोड़ कर पीठ दिखाने वालों की भी कमी नहीं है। जो नवयुवक पहली कड़ी के लिए अपने आप को तैयार कर लेता है, फिर उसे सैनिक परिवार की पहली पायदान पर प्रवेश मिलता है, अर्थात – प्रशिक्षण। सैन्य प्रशिक्षण का अर्थ एक वैसे पाठ से है, जहां पर कठोर अनुशासन के साथ कठिन व विषम परिस्थितियों से निपटने की शिक्षा दी जाती है। इस दरम्यान इन्हें तराशा जाता है, अर्थात इन्हें कड़े से कड़े शारीरिक व्यायाम, बाधा-प्रशिक्षण, क्रॉस कंट्री की दौड़, कैंप फायर, रेंज फायरिंग तथा अन्य विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से गुजरना पड़ता है। इसके साथ-साथ उन्हें विभिन्न प्रकार की ड्रिल्स भी सिखाई जाती हैं जो कि बहुत ही तराशे हुए प्रशिक्षकों द्वारा दी जाती है। यहाँ पर अनुशासनहीनता अथवा किसी भी प्रकार की गलती का स्थान बिलकुल नहीं है। अगर किसी से जाने-अनजाने में कोई गलती हुई तो सजा में कोई बाकी-बकाया रखने का प्रावधान बिलकुल नहीं है। उन्हें उसी वक्त, उसी स्थान पर, सजा नगद प्रदान की जाती है। अर्थात, अप-रायफल, दौड के चल, नेल डाउन, ओन दी हैंड्स डाउन, फ्रंट रोल, बैक रोल, फ्रॉग जंप, दौड़ कदम ताल, क्रीम रोल और न जाने ऐसी कितनी सजाओं का प्रावधान है, जिसका विवरण करना भी मुश्किल है। इसके अलावा इन्हें समाज में स्वयं कैसा आचरण करना है, यह भी सिखाया जाता है, ताकि समाज में सैनिक की एक अलग छवि निरंतर उभरी रहे।

बुनियादी प्रशिक्षण के बाद शुरू होता है, सैनिक का व्यावसायिक प्रशिक्षण, अर्थात सेना के भिन्न-भिन्न अंगों में कार्य करने हेतु विशेष प्रशिक्षण। इस विशेष प्रशिक्षण में दक्षता प्राप्त करने के पश्चात् इन्हें एक और दौर से गुजरना पड़ता है, जो है, ओन जॉब ट्रेनिंग, अर्थात विशेष रूप से प्राप्त प्रशिक्षण को, वरिष्ठ सैनिकों की मौजूदगी में, वास्तविक कार्य क्षेत्र पर प्रदर्शन करना। यहाँ पर उन्हें स्वयं को सिद्ध करना पड़ता है कि वे अब अपने कार्य पर तैनाती के लिए सक्षम हैं। इन सारी प्रक्रियाओं से गुजरने में वर्षों लग जाते हैं, तब जाकर एक तराशा हुआ सैनिक तैयार होता है।

ये बात तो प्रशिक्षण की थी, लेकिन वास्तविक दुनिया थोड़ी अलग होती है। प्रशिक्षण में की गई गलती को तो सजा काट कर भारपाई कर ली जाती है, पर वास्तविक कार्य क्षेत्र में गलती की बिल्कुल गुंजाईश नहीं है। गलती का मतलब जान से हाथ धोना होता है। वास्तविक कार्य क्षेत्र पर एक सैनिक को अति सतर्कता व चौकसी के साथ अपनी ड्यूटी करनी होती है। तनिक भी लापरवाही, एक बहुत बड़े खतरे को आमंत्रित कर सकती है। इसके साथ-साथ इन्हें अपनी पहनने-ओढ़ने से लेकर वेशभूषा, उच्च कोटि का अनुशासन एवं

निः स्वार्थ सेवा-भाव के प्रदर्शन के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहना होता है। अपने कार्य क्षेत्र पर उनका एक उच्च दर्जे का प्रदर्शन हो सके, इसके लिए उन्हें एक तगड़ा होम वर्क करना पड़ता है। सामान्यतः जो लोग सेना में नहीं है, अपने कार्य के लिए कार्यालय काल तक ही समर्पित होते हैं, परंतु एक सैनिक अपनी ड्यूटी के बाद भी अगली ड्यूटी पर जाने की तैयारी में हमेशा लगे रहते हैं। कभी वर्दी तैयार करने में तो कभी जूते पोलिश में, कभी बाल की कटाई तो कभी डिवीजन परेड की तैयारी, इत्यादि-इत्यादि में हमेशा व्यस्त ही रहते हैं, अर्थात सुबह से शाम तक उन्हें चैन नहीं है। बोलने को सभी लोग बड़े आराम से बोलते हैं कि एक सरकारी कर्मचारी चौबीस घंटे ड्यूटी को बाध्य है, पर वास्तविक चौबीस घंटे की ड्यूटी क्या होती है, इसका सही-सही आभास सिर्फ एक सैनिक को ही होता है।

सेना का सेवाकाल भी आम असैनिक सरकारी सेवा से कम होता है। सैनिक जब तक सैन्य सेवा में होता है, तब तक तो अपनी तमाम कर्तव्यों का भली-भांति निर्वहन करता है। चाहे वो कर्तव्य देश के प्रति हो या फिर अपने परिवार के प्रति। वह हरेक आयाम पर स्वयं को सफल बनाने की कोशिश करता है, पर उस वक्त एक सैनिक का बहुत बुरा हाल हो जाता है, जब अल्पायु में ही इन्हें सेवा निवृत कर दिया आता है। हालाँकि पेंशन दी जाती है, पर उस वक्त, जब आदमी की जिम्मेवारी अपनी चरम सीमा पर हो और अचानक से पगार आधी हो जाय तो क्या होगा ? कल्पना मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उस अवस्था में कैसी स्थिति उत्पन्न होगी? इसका अंदाजा आप खुद भी लगा सकते हैं। हालाँकि सरकार द्वारा उन्हें पुनः सरकारी सेवा में आने के कुछ अत्यंत सीमित अवसर प्रदान किए जाते हैं, जो कि नगण्य हैं। फिर भी सैनिक विचलित नहीं होते हैं और स्वयं के हालात के साथ समझौता कर पुनः समाज में लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना शुरू कर देते हैं।

ईएसआई चिंता से मुक्ति है!

बीमितों का अंशदान संजोकर, बूंद बूंद से सागर भरकर।
हितलाभ को आज उमड़कर, लहराई ईएसआई उफनकर।।

करती जीवन मार्ग सबल, बन ढाल बीमितों की सकल।
एहसास दिलाती यह पल-पल, ना है बीमित अब दुर्बल।।

हितधारक का ले अंशदान, कामगारों का रखती ध्यान।
ईएसआई करती कार्य महान, दे स्वास्थ्य लाभ या नगद प्रदान।।

सामाजिक सुरक्षा का संकल्प, ले खड़ी ईएसआई तरू प्रकल्प।
देती प्रचुर पर लेती अल्प, है ईएसआई एकमात्र विकल्प।।

पंचदीप प्रकल्प तले, अंशदान से हितलाभ फले।
आफत जब लगती गले, ईएसआई करती तब भले ।।

सुख का साथी है संसार, दुख में सब देते विसार ।
ईएसआई करती तब भव पार, करके अपनी पंख पसार ।।

बीमारी हुई या हुए अपंग, नगदी मिलेगी छुट्टी के संग ।
दुखदिन में छाएगी उमंग, गृहस्थी कभी ना होगी तंग ।।

जी हां। ईएसआई हैं हम, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
ले अंशदान की मामूली रकम, हितलाभ देते भारी भरकम ।।

सामाजिक सुरक्षा के परिवेश में, हैं उम्दा एशिया महादेश में ।
सुविधाओं के समावेश में, है त्वरित ईएसआई आवेश में ।।

हितधारक इसकी शक्ति है, वीआईपी बीमित व्यक्ति है।
ना इसमें अब अतिशयोक्ति है, ईएसआई चिंता से मुक्ति है।।

- सुविन कुमार
सहायक

अंतरिक्ष में भारत

"अब लौट के समय सही आया, जब से देशप्रेम को अपनाया।
पूर्वजो का गौरव वापस आया, भारत स्पेस पॉवर बन छाया।"

आज भारत विश्व का एक ऐसा विकासशील राष्ट्र बन चुका है, जो विश्व के सर्वाधिक विकसित राष्ट्र रूस और अमेरिका की वैज्ञानिक शक्तियों एवं महत्व से प्रतिस्पर्धा करते जा रहा है। संसार में आज अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में जो होड़ लगी हुई है, उसमें भारत तनिक भी पीछे नहीं है। वास्तव में भारत की अंतरिक्ष वैज्ञानिक प्रगति देखने योग्य है।

भारत का पौराणिक इतिहास अंतरिक्षीय प्रसंगों से भरा पड़ा है। इंद्र से लेकर रावण तक अनेक विमानसवारों के कथा प्रसंग पुराणों में उल्लिखित हैं। किंतु विधि की विडंबना कि आधुनिक काल में जब भारत सदियों की गुलामी के बाद टूट-फूट और बिखरकर आजाद हुआ, तब संसार में भारत की हैसियत एक बैलगाड़ी आधारित अर्थ-व्यवस्था वाले कृषि प्रधान देश की थी। भारतीय वैज्ञानिकों की क्षमता और कोशिशों के आधार पर ही अंतरिक्ष में भारत ने आज अपनी जगह बना ली है। भारत की अंतरिक्ष यात्रा तिरुअनंतपुरम के निकट मुंबा नामक स्थान पर सन् 1963 में रॉकेट प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने से शुरुआत हुई। अंतरिक्ष विज्ञान पर व्यवस्थित रूप से काम करने के लिए सन् 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का गठन किया गया। इसके बाद सन् 1972 में भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग तथा अंतरिक्ष आयोग की भी स्थापना की।

"झुक गये होंगे चाँद सितारे भी तेरे नाम से जब
आसमान में पहली बार तिरंगा लहराया होगा बड़ी शान से।"

भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट, 19 अप्रैल 1975 को सोवियत संघ द्वारा छोड़ा गया था। इसने 5 दिन बाद काम करना बंद कर दिया था। लेकिन यह अपने आप में भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। 7 जून 1979 को भारत का दूसरा उपग्रह भास्कर जो 445 किलो का था, पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया।

1980 में रोहिणी उपग्रह पहला भारत-निर्मित प्रक्षेपण यान एसएलवी-3 बन गया, जिसे कक्षा में स्थापित किया गया है। इसरो ने बाद में दो अन्य रॉकेट विकसित किए। 19 जून, 1981 में भारत द्वारा फ्रांस की भूमि से छोड़ा गया एप्पल नामक उपग्रह अब भी अंतरिक्ष की परिक्रमा कर रहा है। नवम्बर, 1981 में छोड़ा गया भास्कर द्वितीय भी इसी क्रम में अनुसंधान कर रहा है। अहमदाबाद, मंगलूर, कोटा, तिरुवनन्तपुरम के अनेक भारतीय वैज्ञानिक अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित अनुसंधान कार्य में सलग्न हैं। भारत अंतरिक्ष अनुसंधान विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर कदम बढ़ाता जा रहा है। इसी तरह 18 अप्रैल 2001 को श्री हरिकोटा हाई एल्टीट्यूड रेंज से भारतीय समयानुसार 3.45 पर जी.एस.एल.वी. प्रेक्षण यान छोड़ा गया। भारत को अब अपने दूर संवेदी उपग्रहों को छोड़ने के लिए विदेशी अंतरिक्ष एजेंसियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। श्री हरिकोटा से भूस्थैतिक उपग्रह प्रक्षेपण यान के जरिए एक संचार उपग्रह को अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक भेजकर भारत उन देशों की कतार में खड़ा हो गया है, जो उपग्रह प्रक्षेपण में विशेषज्ञ माने जाने हैं।

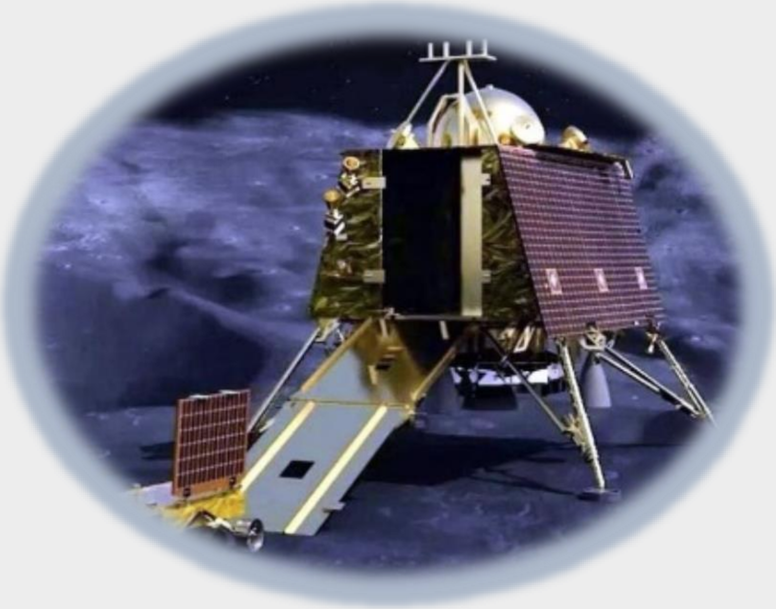

वर्तमान संचार युग में अंतरिक्ष प्रक्षेपण के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के अथक प्रयास ने भारत को यह महारत हासिल करवाई है। अब तक के अट्ठारह प्रक्षेपणों में चार बार की असफलता और एक बार की अर्ध सफलता से वैज्ञानिक और तकनीशियन निराश नहीं हुए। भारतीय वैज्ञानिक और तकनीशियनों की प्रतिभा दुनिया में किसी से कम नहीं हैं।

इसरो ने 22 अक्टूबर 2008 को चंद्रयान-भेजा, जिसने चन्द्रमा की परिक्रमा की। इसके बाद 24 सितंबर 2014 को मंगल ग्रह की परिक्रमा करने वाला मंगलयान भेजा | इसने सफलतापूर्वक मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश किया और इस प्रकार भारत अपने पहले ही प्रयास में सफल होने वाला पहला राष्ट्र बना।

"एक लांच में एक सौ से भी ज्यादा, भेज दिए सैटेलाइट आई ना बाधा।
साउथ एशियन देशों के लिए एक उपग्रह भारत ने भी दे दिया।"

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के प्रक्षेपण यान पीएसएलवी ने 15 फरवरी 2017 श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंद्र से एक रॉकेट में 104 उपग्रहों का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। इन 104 उपग्रहों में भारत के 3 और विदेशी राज्यों के 101 सैटेलाइट शामिल थे। भारत एक रॉकेट से 104 उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजकर इस तरह का इतिहास रचने वाला पहला देश बन गया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष के नेतृत्व में 15 जुलाई 2019 को चंद्रयान-2 को सफलतापूर्वक लॉन्च किया। 14 जुलाई 2023 को श्रीहरिकोटा से उड़ान भरने वाले चंद्रयान-3 ने अपनी 40 दिनों की लंबी यात्रा पूरी की और 23 अगस्त 2023 को चांद की सतह पर उतर कर इतिहास रच दिया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतरने वाला भारत पहला देश बन गया है। भारतीय अंतरिक्ष, अनुसंधान विज्ञान की प्रगति से भारतीय वैज्ञानिकों की अद्भुत प्रतिभा, साहस, धैर्य, क्षमता और जिज्ञासा की भावना प्रकट होती है। इसके साथ ही हमें अपने देश के इस अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र मे अपूर्व योगदान देने वाले वैज्ञानिकों को पाकर अत्यंत गर्व और स्वाभिमान होता है।

"भारत अंतरिक्ष महाशक्ति, ऐसा सब कह रहे चारों ओर।
हजारों साल के बाद अब जाकर, भारतवासी हुए आत्म विभोर।"

- प्रबीशा बालन
सहायक

एक मां और उसके तीन बच्चे

काफी अंधेरा हो चुका था। मैं और मेरे तीन बच्चे बिना कुछ खाए सो गए। तभी अचानक बाहर मेरे एक बच्चे की रोने की आवाज से मेरी नींद खुल गई। उस आवाज से मेरी धड़कन तेज हो गई और मैं उसे ढूंढने घर के बाहर दौड़ पड़ी। बाहर जाते ही जो दृश्य मैंने देखा, उससे मेरे पैरों तले की जमीन खिसक गई। एक आदमी मेरे बच्चे पर बंदूक तानकर खड़ा था। तभी अचानक बंदूक चलने की आवाज आई और दूसरे ही क्षण मेरा बच्चा खून से लथपथ होकर मेरे सामने पड़ा था......

साल 2056

दुनिया अपने अंत के करीब खतरे में थी। उन्होंने मेरे पति को मार डाला। वह हमारे बच्चों की रक्षा करने की कोशिश में मारे गए। हमारा समूह भी दिनोंदिन छोटा होता जा रहा था। मुझे खबर मिली कि दुश्मन अभी भी हमारे पीछे था। मेरे पति की मृत्यु की सूचना पाकर पूरा समूह हिल गया था। वह उनके नेता थे और सभी उनका आदर करते थे। मैं अपने बच्चों की जान को लेकर डरी हुई थी। वे अभी इतने ताकतवर नहीं थे और मेरी तरह लड़ना भी नहीं जानते थे।

उजाले के वक्त भी मैं उन्हें बाहर जाने देने का साहस जुटा नहीं पाती थी। मैं जानती थी अन्यथा इसका परिणाम उनकी मृत्यु है। मुझे उन्हें सुरक्षित रखना था और इसलिए अंधेरे में रहना ही एकमात्र विकल्प था। काश हमारे पास पेट न होता और हमें भूख ही ना लगती। तब हमारे लिए सुरक्षित रहना आसान हो जाता। लेकिन ऐसा न होने के कारण मुझे रोज बाहर जाना पड़ता था ताकि मैं अपने बच्चे को भूखा ना रखूं। मुझे अपने बच्चों के लिए खाना लाने के लिए हर दिन किसी न किसी से लड़ना पडता था। किसी-किसी दिन खाना नहीं मिलता था तो मुझे खाली हाथ ही वापस घर लौटना पड़ता था। ऐसे दिनों में, मैं चाहती थी कि मेरे पति जीवित होते।

ऐसे ही एक दिन खाने के लिए कुछ न मिलने के कारण मैं खाली हाथ घर लौटी। काफी अंधेरा हो चुका था। मैं और मेरे तीन बच्चे बिना कुछ खाए सो गए। तभी अचानक बाहर से मेरे एक बच्चे की रोने की आवाज से मेरी नींद खुल गई। उस आवाज से मेरी धड़कन तेज हो गई और उसे ढूंढने घर के बाहर दौड़ पड़ी। बाहर जाते ही जो दृश्य मैंने देखा, उससे मेरे पैरों तले की जमीन खिसक गई। एक आदमी मेरे बच्चे पर बंदूक तानकर खड़ा था। तभी अचानक बंदूक चलने की आवाज आई और दूसरे ही क्षण मेरा बच्चा खून से लथपथ होकर मेरे सामने पड़ा था।

बिना एक पल की देरी किए मैं उस आदमी पर झपट पड़ी। मैंने अपने मजबूत नाखूनों से उसके चेहरे पर गहरे घाव कर दिए और उनमें से खून निकले निकलने लगा। वह भयभीत होकर मुझसे दूर भाग गया। मैं अपने बच्चे की देह के पास बैठकर रोने लगी। तभी अचानक मुझे दूसरी चीख सुनाई दी। शत्रु दल हमारे घर में घुस चुका था। उन्होंने मेरे बाकी दो बच्चों को घेरा था। यह देखकर मैं अपनी पूरी ताकत से उनके पास दौड़ी और दुश्मन पर हमला करने की कोशिश की। लेकिन तभी एक ने बंदूक चलाई और मुझे महसूस हुआ कि गोली मेरी त्वचा को भेद गई है। दर्द के बावजूद मैं आगे बढ़ती रही। मुझे अपने बच्चों को किसी भी हाल में सुरक्षित रखना था। तभी एक और गोली मेरे सीने पर जोर से लगी। मुझ पर एक के बाद एक गोलियां बरसाई गईं। मैं अपनी आखिरी सांस तक दुश्मनों से लड़ती रही। कुछ ही देर में मेरी दोनों आंखे बंद हो गई..

अगले दिन समाचार में –

"बाघ प्रजाति समाप्त हो गई! वे अब अधिकारिक तौर पर विलुप्त हो चुके हैं। एक माँ बाघिन और उसके तीन शावकों का अंतिम परिवार कल मारा गया! वह अपनी प्रजाति की अंतिम साम्राज्ञी थी। पांच लोग घायल, एक की हालत गंभीर। शिकारियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। माँ बाघिन के शरीर पर 17 गोलियां लगी थी!"

- परेश चव्हाण

प्रवर श्रेणी लिपिक

बंद कमरे की तितली

बंद कमरे की तितली वो थी दुनिया से अनजान,
कहती दीवारें दुनिया तेरी ये
पर छूना चाहती वो आसमान,

बेखबर कि मंजिल किधर
है डगर कौन सी जानी
बन मुसाफिर निकल पड़ी
राह वो अनजानी

हुई गुमराह गिरती संभलती
परिस्थितियों से सीखती गई
कर सामना चुनौतियों का
सशक्त वो बनती गई

था हौसला अब बुलंद
प्रयास अब भी जारी है
चारदीवारी छुट गई
अब आसमान की बारी है

- मौसमी कुमारी
बहुकार्य कर्मचारी

बेरोजगार

सुबह-सुबह उठते ही, तानों की बरसात
दिन ब दिन बदल रहे हैं कैसे ये हालात
वह अखबार उठाते,
उसमें खोजता अपने लिए रोजगार
पिता जी आये, और गुस्से में कह गये,
लो उठ गया बेरोजगार।

अब ये ताना सुनने की उसको जैसे आदत सी हो गई
अच्छी खासी जिन्दगी जैसे कयामत सी हो गयी
खुद ही खुद में सोच रहा यो, ये बचपन कहां खो गया
पहले पढाई फिर नौकरी के चक्कर में जाने कब बड़ा मैं हो गया

यार दोस्त भी बिछड़ गये,
पुराने खेल भी जाने किधर गये
किधर गये वो प्यारे लम्हे
वो किस्से ना जाने किधर गये

जवान हो गया है लड़का अब, हो गया है समझदार
पापा जी को कहते रहते उनके दोस्त और रिश्तेदार
भाई साहब मेरा लड़का तो कर रहा खूब व्यापार
और कोई बोलता, मेरे बेटा कमाता अस्सी हजार
पिता जी को लगता ऐसा, उनकी इज्जत हुई शर्मशार
सबके बच्चे सेंटल हो गये, मेरा बेटा बेरोजगार

मां भी दिनभर पड़ोसियों के बेटों के किस्से सुनाती
बेटा तू भी नौकरी कर ले और घर की आर्थिक स्थिति बताती
तेरे पिता के कन्धों पर है घर का काफी ज्यादा भार
और उपर से तू नालायक बेटा, बैठा बेरोजगार

क्या उससे कभी पूछा किसी ने कि
उसने क्या करना चाहा
छोड़ के अपने शौक और सपने
मां बाप के खातिर पढ़ना चाहा

जो जो कहा घरवालों ने
मन मारकर उसने वो काम किया
मां बाप के सपनों के खातिर
अपने सपनों को बलिदान किया

हां अभी हाथ ना लगी सफलता,
तो सब के सब ताने मारने लगे
बाहर वाले तो कहते ही थे,
घरवाले भी बेरोजगार पुकारने लगे

यह मौन रहकर सब सहकर,
कर रहा निरंतर प्रयास
ना छोड़ रहा कसर कोई भी,
चाहे मिलती रहे उसे हार

वो जानता है ये वही समाज है
जो उसकी सफलता पर ताली मारेगा
आज बेरोजगार बोल रहा कल
मेरी कविताएं दोहराएगा
कल मेरी कविताएं दोहराएगा

- सुदेश लकवाड़
प्रवर श्रेणी लिपिक

(इंटरनेट से साभार)

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं...

जो तकिये के बिना कहीं भी, सोने से कतराते थे...
आकर कोई देखे तो, वो कहीं भी अब सो जाते हैं...
खाने में सौ नखरे वाले, अब कुछ भी खा लेते हैं...
अपने रूम में किसी को भी, नहीं आने देने वाले...
अब एक बिस्तर पर सबके साथ, एडजस्ट हो जाते हैं...
बेटे भी घर छोड़ जाते हैं...

घर को मिस करते हैं लेकिन, कहते हैं 'बिल्कुल ठीक हूँ'...
सौ-सौ ख्वाहिशें रखने वाले, अब कहते हैं 'कुछ नहीं चाहिए'...
पैसे कमाने की जरूरत में, वो घर से अजनबी बन जाते हैं...
लड़के भी घर छोड़ जाते हैं...

बना बनाया खाने वाले, अब वो खाना खुद बनाते हैं...
माँ-बहन-बीवी का बनाया, अब वो कहाँ खा पाते हैं...
कभी थके-हारे भूखे भी सो जाते हैं...
लड़के भी घर छोड़ जाते हैं...

मोहल्ले की गलियां, जाने-पहचाने रास्ते,
जहाँ दौड़ा करते थे अपनों के वास्ते...
माँ-बाप, यार-दोस्त सब पीछे छूट जाते हैं...
तन्हाई में करके याद, लड़के भी आँसू बहाते हैं...
लड़के भी घर छोड़ जाते हैं...

नई नवेली दुल्हन, जान से प्यारे बहिन भाई,
छोटे-छोटे बच्चे, चाचा-चाची, ताऊ ताई,
सब छुड़ा देती है साहब, ये रोटी और कमाई...
मत पूछो इनका दर्द, वो कैसे छुपाते हैं,
बेटियाँ ही नहीं साहब,
बेटे भी घर छोड़ जाते हैं...

(हर उस बेटे को समर्पित, जो घर से दूर है।
चाहे वो होस्टल में हो या नौकरी के लिए दूर
शहर में रहते हैं।)

- सुदेश लकवाड़
प्रवर श्रेणी लिपिक

(इंटरनेट से साभार)

1 ते 50 मराठी अंक

अंक	मराठी	अंक	मराठी	अंक	मराठी	अंक	मराठी	अंक	मराठी
1	एक	11	अकरा	21	एकवीस	31	एकतीस	41	एक्केचाळीस
2	दोन	12	बारा	22	बावीस	32	बत्तीस	42	बेचाळीस
3	तीन	13	तेरा	23	तेवीस	33	तेहेतीस	43	त्रेचाळीस
4	चार	14	चौदा	24	चोवीस	34	चौतीस	44	चव्वेचाळीस
5	पाच	15	पंधरा	25	पंचवीस	35	पस्तीस	45	पंचेचाळीस
6	सहा	16	सोळा	26	सव्वीस	36	छत्तीस	46	सेहेचाळीस
7	सात	17	सतरा	27	सत्तावीस	37	सदतीस	47	सत्तेचाळीस
8	आठ	18	अठरा	28	अठ्ठावीस	38	अडतीस	48	अठ्ठेचाळीस
9	नऊ	19	एकोणीस	29	एकोणतीस	39	एकोणचाळीस	49	एकोणपन्नास
10	दहा	20	वीस	30	तीस	40	चाळीस	50	पन्नास

51 ते 100 मराठी अंक

अंक	मराठी	अंक	मराठी	अंक	मराठी	अंक	मराठी	अंक	मराठी
51	एक्कावन्न	61	एकसष्ठ	71	एकाहत्तर	81	एक्याऐंशी	91	एक्क्याण्णव
52	बावन्न	62	बासष्ठ	72	बहात्तर	82	ब्याऐंशी	92	ब्याण्णव
53	त्रेपन्न	63	त्रेसष्ठ	73	त्र्याहत्तर	83	त्र्याऐंशी	93	त्र्याण्णव
54	चौपन्न	64	चौसष्ठ	74	चौऱ्याहत्तर	84	चौऱ्याऐंशी	94	चौऱ्याण्णव
55	पंचावन्न	65	पासष्ठ	75	पंच्याहत्तर	85	पंच्याऐंशी	95	पंच्याण्णव
56	छप्पन्न	66	सहासष्ठ	76	शहात्तर	86	शहाऐंशी	96	शहाण्णव
57	सत्तावन्न	67	सदुसष्ठ	77	सत्त्याहत्तर	87	सत्त्याऐंशी	97	सत्त्याण्णव
58	अठ्ठावन्न	68	अडुसष्ठ	78	अठ्ठ्याहत्तर	88	अठ्ठ्याऐंशी	98	अठ्ठ्याण्णव
59	एकोणसाठ	69	एकोणसत्तर	79	एकोणऐंशी	89	एकोणनव्वद	99	नव्व्याण्णव
60	साठ	70	सत्तर	80	ऐंशी	90	नव्वद	100	शंभर

हिंदी ज्ञान की परिभाषा

1. ***हिंदी में प्रवीणता*** - *किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है यदि उसने-*

   (क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाकर उत्तीर्ण की है; अथवा

   (ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समकक्ष या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को उसने एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था; अथवा

   (ग) वह यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

2. ***हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान*** - *किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, यदि उसने-*

   (i) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है; अथवा

   (ii) केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट वर्ग के पदों के संबंध में निर्धारित कोई निम्नस्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है; अथवा

   (iii) केंद्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्धारित कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

   (iv) यदि वह यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

संसदीय राजभाषा समिति

वर्तमान संसदीय राजभाषा समिति का गठन दिनांक 18-09-2024 को किया गया है, जिसका विवरण निम्न प्रकार है:-

अध्यक्ष / Chairman
श्री अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री
Shri Amit Shah, Union Home Minister

उपाध्यक्ष / Deputy Chairman
श्री भर्तृहरि महताब
Shri Bhartruhari Mahtab

डॉ. दिनेश शर्मा
Dr. Dinesh Sharma

संयोजक / Convenor
पहली उप-समिति
First Sub-Committee

श्री उज्ज्वल रमण सिंह
Shri Ujjwal Raman Singh

संयोजक / Convenor
दूसरी उप-समिति
Second Sub-Committee

श्रीयुत श्रीरंग अप्पा चंदू बारणे
Shri Shrirang Appa Chandu Barne

संयोजक / Convenor
तीसरी उप-समिति
Third Sub-Committee

निगम में लागू विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का संक्षिप्त विवरण

1. **हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना**: - इस योजना में भाग लेने वाले कर्मचारी के संबंध में उसके अधिकारी को प्रमाण पत्र देना होता है कि उक्त कर्मचारी ने कैलेन्डर वर्ष के दौरान अपने कार्यालय का दैनिक कार्य निर्धारित प्रतिशत तक हिंदी में किया है। **अधिकारी द्वारा दिए गए प्रमाण पत्र के आधार पर कर्मचारी को 1200/- रुपए का नकद पुरस्कार** दिया जाता है।

2. **वार्षिक मूल हिंदी टिप्पण/आलेखन पुरस्कार योजना:** - इसमें कर्मचारी को पूरे वित्त वर्ष के दौरान हिंदी में लिखी गई टिप्पणियों/मसौदों का रिकार्ड रजिस्टर में रखना होता है। वर्ष में न्यूनतम 20,000 शब्द लिखने वाले कर्मचारी की प्रविष्टि प्राप्त होने के पश्चात् शब्दों, वाक्य रचना व शैली के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। **इस प्रतियोगिता में 10 पुरस्कारों की व्यवस्था है।**

पुरस्कार	पुरस्कारों की संख्या	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार	दो पुरस्कार	5000/-रु. प्रत्येक
द्वितीय पुरस्कार	तीन पुरस्कार	3000/-रु. प्रत्येक
तृतीय पुरस्कार	पांच पुरस्कार	2000/-रु. प्रत्येक

3. **राजभाषा कार्यान्वयन सुझाव पुरस्कार योजना:** - इस प्रतियोगिता में मुख्यालय द्वारा राजभाषा के प्रसार व संवर्धन के निमित्त निगम कार्मिकों से सुझाव मांगे जाते हैं। यदि समिति कर्मचारी द्वारा दिए गए सुझाव को उपयोगी समझती है, तो **अधिकतम 3000/- रुपए और न्यूनतम 600/- रुपए** तक की राशि के पुरस्कार स्वीकृत किए जाते हैं। इसमें प्रतिवर्ष कुल मिलाकर 12000/- रुपए तक के पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

4. **अधिकारियों द्वारा हिंदी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) देने के लिए प्रोत्साहन योजना:** - इस प्रतियोगिता में अधिकारी को एक वित्त वर्ष में कम से कम 100 श्रुतलेख हिंदी में देनी होती हैं और प्रत्येक श्रुतलेख में कम से कम 10 पंक्तियां अवश्य होनी चाहिए। इस प्रतियोगिता में दो पुरस्कारों की व्यवस्था है। एक 'क' तथा 'ख' क्षेत्र के घोषित निवासी और दूसरा 'ग' क्षेत्र के घोषित निवासी **अधिकारी में से प्रत्येक को 5000/- रुपए का नकद पुरस्कार** दिया जाता है।

5. **अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी सरकारी कामकाज करने के लिए आशुलिपिकों तथा टाइपिस्टों को हिंदी प्रोत्साहन भत्ता योजना:** - इस योजना के अधीन एक निर्धारित मात्रा (हिंदी में औसतन 5 टिप्पणियां/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन अथवा 300 टिप्पणियां/प्रारूप/पत्र प्रति तिमाही टाइप करना) में सरकारी कार्य हिंदी में भी करने के लिए **अंग्रेजी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों को क्रमशः 240/- रुपए तथा 160/- रुपए प्रतिमाह विशेष प्रोत्साहन भत्ता** स्वीकार किया जाता है।

6. **हिंदी टंकण प्रशिक्षण:** - के पश्चात् परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर एक वेतनवृद्धि के बराबर 12 महीने तक वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। इसके अतिरिक्त प्राप्तांकों के आधार पर निम्नलिखित नकद पुरस्कारों की व्यवस्था है।

प्राप्तांक के आधार पर नकद पुरस्कार	हिंदी टंकण परीक्षा
97% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रुपए
95% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रुपए
90% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपए

7. **हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण:** - के पश्चात् परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर एक वेतनवृद्धि के बराबर 12 महीने तक वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। हिंदीतर भाषी आशुलिपिकों को पहले 12 महीने के लिए 2 वेतनवृद्धियों और अगले 12 महीनों के लिए एक वेतनवृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है। इसके अतिरिक्त प्राप्तांकों के आधार पर निम्नलिखित नकद पुरस्कारों की व्यवस्था है।

प्राप्तांक के आधार पर नकद पुरस्कार	हिंदी आशुलिपि परीक्षा
95% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रुपए
92% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रुपए
88% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपए

8. हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए हिंदी शिक्षण योजना के माध्यम से निम्न हिंदी भाषा परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाते हैं: -

प्राप्तांक के आधार पर नकद पुरस्कार	प्रबोध परीक्षा	प्रवीण परीक्षा	प्राज्ञ परीक्षा
70% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रुपए	1800/- रुपए	2400/- रुपए
60% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपए	1200/- रुपए	1600/- रुपए
55% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	400/- रुपए	600/- रुपए	800/- रुपए

9. हिंदी शिक्षण योजना के माध्यम से पारंगत परीक्षा उत्तीर्ण करने पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाते हैं: -

प्राप्तांक के आधार पर मानदेय	पारंगत परीक्षा
55% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	4,000/- रुपए
60% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	7,000/- रुपए
70% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	10,000/- रुपए

10. प्रत्येक वर्ष में सितंबर माह में राजभाषा पखवाड़े के दौरान निगम कार्यालयों में चार हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक में निम्न पुरस्कार दिए जाते हैं: -

प्रतियोगिता का नाम	हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी	
हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता	(1) प्रथम पुरस्कार -	1800/- रुपए
हिंदी वाक् प्रतियोगिता	(2) द्वितीय पुरस्कार -	1500/- रुपए
हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता	(3) तृतीय पुरस्कार -	1200/- रुपए
राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता	(4) सांत्वना पुरस्कार -	500/- रुपए
	(5) सांत्वना पुरस्कार -	500/- रुपए

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

गणतंत्र दिवस की झलकियां

महिला दिवस की झलकियां

नवभारत
www.navbharatlive.com

ट्रेड यूनियन संवाद शिविर का आयोजन
मजदूरों की सुविधाओं को लेकर विस्तार से चर्चा

■ ठाणे, (सं). एसआईसी के उप क्षेत्रीय कार्यालय ठाणे में विभिन्न ट्रेड यूनियन संवाद शिविर का आयोजन किया गया. इस शिविर का आयोजन संयुक्त निदेशक सुधाकर सिंह के मार्गदर्शन में हुआ. इसमें कई प्रमुख ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि मौजूद रहे. इस दौरान श्रमिकों के हित और लाभ के संदर्भ में चर्चा की गयी. ट्रेड यूनियन नेताओं के रूप में राष्ट्रीय सर्व श्रमिक संघ के राज्य महासचिव सुरेश कोलते, संतोष पठाने, दिलीप कुमार तोताराम मुंडे, गणेश पाटिल तथा अन्य कई लोग मौजद थे.

अस्पतालों की कमी का उठा मुद्दा

आयोजित इस शिविर में रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिले में चिकित्सा सुविधाओं की कमी का मुद्दा सुरेश कोलते ने उठाते हुए कहा कि यहां अस्पतालों की संख्या कम है, इसलिए श्रमिकों को स्वास्थ्य सेवा का लाभ नहीं मिल पाता है. इसके साथ ही संतोष पठाने ने कहा कि इन अस्पतालों में उपलब्ध की जाने वाली सामग्री पर राजभाषा का उपयोग होना चाहिए. इसके आलावा गणेश पाटिल ने श्रमिकों के वेतन बढ़ाये जाने की मांग की. उन्होंने कहा कि यह वेतन सीमा 21 हजार से बढ़ाकर तीस हजार रुपये तक कर देना चाहिए.

Thane NaviMumbai plus Edition
Jan 25, 2025 Page No. 2
Powered by: navbharatlive.com

विभिन्न मजदूर संघों के साथ संवाद शिविर

जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

प्रातःकाल संवाददाता

मुंबई। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे द्वारा खोपोली स्थित टाटा स्टील में जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर टाटा स्टील के शशि भूषण, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) सुधाकर सिंह, व डॉ. देवयानी के नेतृत्व में हुआ। शिविर के दौरान उप निदेशक प्रदीप जायभाये एवं सहायक प्रबिषा बालन ने बीमाकृत व्यक्तियों को निगम द्वारा प्रदान किए जा रहे विभिन्न हित-लाभों एवं सुविधाओं की जानकारी दी। शिविर में 300 से अधिक बीमाकृत व्यक्तियों ने भाग लिया और स्वास्थ्य जांच सेवाओं का लाभ उठाया।

जागरूकता एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

विशेष सेवा पखवाड़ा की झलकियां

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment, Government of India
ईएसआईसी के साथ आधार सीडिंग क्यों आवश्यक है ?
1
वित्तीय लेनदेन में धोखाधड़ी को रोकने के लिए
2
सुगमता से ईएसआई योजना का लाभ पाने के लिए
3
डी-डुप्लीकेशन प्रक्रिया को निष्पादित करने और डुप्लिकेट आईपी नंबर को रोकने के लिए
4
कभी भी, कहीं भी, आसानी से ई-केवाईसी करने के लिए
5
सेवा वितरण के समय लाभार्थियों को प्रमाणित करने के लिए
@esichq
www.esic.gov.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment, Government of India
सत्यमेव जयते
क.रा.बी.नि.
E. S. I. C.
ईएसआई लाभार्थियों का
डिजिटल साथी
AAA+ (Ask an Appointment) मोबाइल ऐप
ईएसआई योजना के अंतर्गत स्वास्थ्य एवं चिकित्सा हितलाभ लेने के लिए अस्पताल के लाइन/पंक्ति में इंतजार करने की आवश्यकता नहीं
ईएसआईसी की AAA+ मोबाइल ऐप के माध्यम से ऑनलाइन डॉक्टर अप्वाइंटमेंट बुक एवं रद्द करें
ESI's Digital India
WEEKLY SCHEDULE
Doctor Appointment
@esichq
www.esic.gov.in